Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

सं० ८२

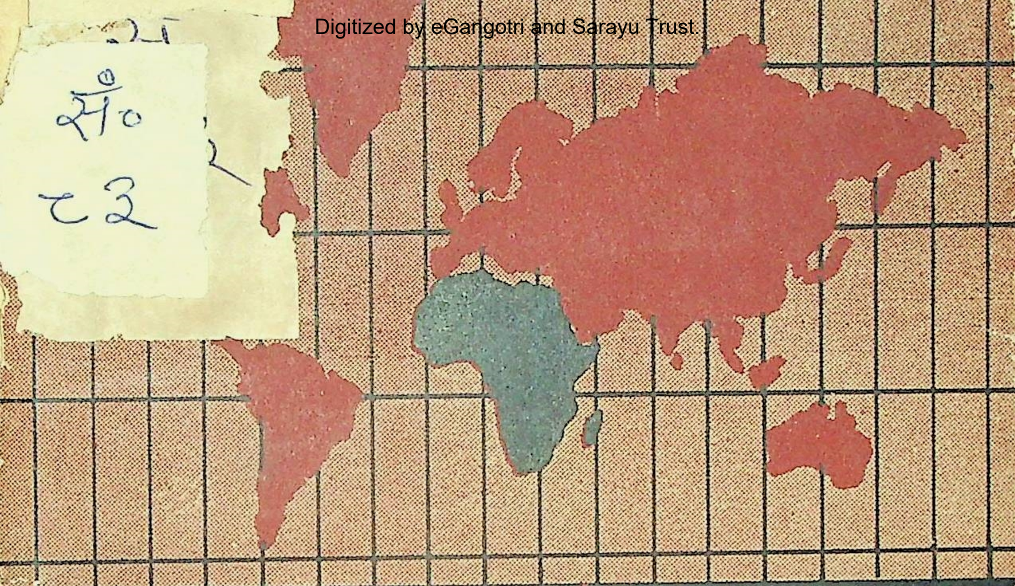

अफ्रीका

मदन गोपाल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अफ्रीका

मदन गोपाल

श्री मदन गोपाल भारतीय पत्रकार-जगत् में एक विशिष्ट स्थान रखते हैं। पिछले वर्षों साहित्यिक व अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर लिखे हुए उनके कुछ स्तम्भ हिन्दी समाचार-पत्रों में लोकप्रिय रहे हैं। उनके अध्ययन और व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर लिखे हुए विभिन्न देशों के परिचयात्मक लेखों ने भी पाठकों को विशेष रूप से प्रभावित किया है।

इस पुस्तक में लेखक ने अफ्रीका महाद्वीप के विभिन्न देशों की भौगोलिक एवं सामाजिक परिस्थिति का चित्रण बड़ी ही सरल भाषा में किया है। इसे देख जाने पर पाठक अफ्रीका की सामाजिक परिस्थितियों तथा वहाँ के निवासियों की मूल समस्याओं को आसानी से समझ सकेंगे। वास्तविक भौगोलिक परिचय देने के लिए इस पुस्तक में प्रत्येक देश का नक्शा भी विवरण के सामने दे दिया गया है।

पुस्तक नव-साक्षरों के लिए विशेष रूप से उपयोगी है।

मूल्य दो रुपये

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राजकमल विश्व-परिचय माला

अफ्रीका

अफ्रीका महाद्वीप के विभिन्न देशों का भौगोलिक-सामाजिक परिचय

मदन गोपाल

राजकमल

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली बम्बई इलाहाबाद पटना मद्रास

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

© मदन गोपाल, १९५८

प्रथम संस्करण, मार्च १९५८

मूल्य दो रुपये

राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली द्वारा प्रकाशित व श्री गोपीनाथ सेठ द्वारा नवीन प्रेस, दिल्ली से मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इस पुस्तक-माला का मूल उद्देश्य पाठकों को विश्व के सभी देशों की सामान्य भौगोलिक-सामाजिक जानकारी देना है। विभिन्न महाद्वीपों पर अलग-अलग पुस्तकें प्रकाशित की जा रही हैं।

—प्रकाशक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

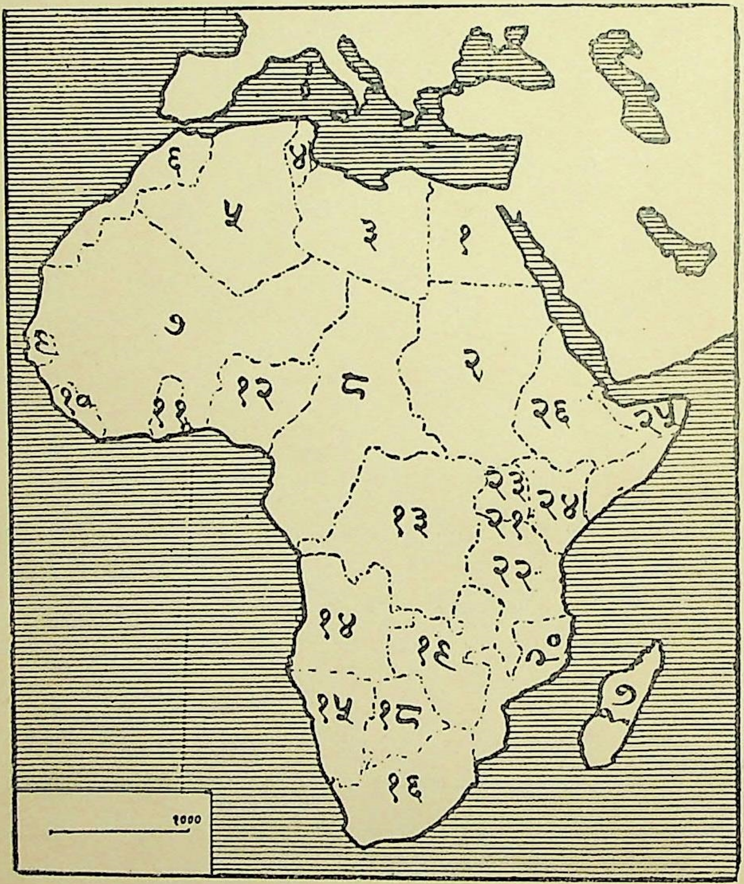

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

क्रम

	प्राक्कथन	१
१.	मिस्र	१५
२.	सूडान	१७
३.	लिबिया	१६
४.	ट्यूनीसिया	२१
५.	अलजीरिया	२३
६.	मोरक्को	२५
७.	फ्रांसीसी पश्चिमी अफ्रीका	२७
८.	फ्रांसीसी कांगो	२६
९.	सीरालोने और गेम्बिया	३१
१०.	लाइबेरिया	३३
११.	घाना	३७
१२.	नाइजीरिया	३६
१३.	बेल्जियमी कांगो	४१
१४.	अंगोला	४५
१५.	दक्षिण-पश्चिमी अफ्रीका	४६
१६.	दक्षिणी अफ्रीका	५१
१७.	मदगास्कर और मौरीशस	५३
१८.	मध्य अफ्रीकी संघ	५५
१९.	दक्षिणी अफ्रीका में 'रक्षित क्षेत्र'	५७
२०.	मौज़मबीक	५६
२१.	ब्रिटिश पूर्वी अफ्रीका	६१
२२.	तांगानीका	६५
२३.	यूगंडा	६६
२४.	केनिया	७१
२५.	सोमालीलैंड	७५
२६.	इथियोपिया	७७

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्राक्कथन

अफ्रीका महाद्वीप एशिया से तो छोटा है, परन्तु विश्व के दूसरे महाद्वीपों में सबसे बड़ा। विशेषज्ञों के कथनानुसार मानव-जाति की उत्पत्ति से कई लाख वर्ष पूर्व अफ्रीका इससे भी बड़े एक महाद्वीप का भाग था, जो शायद भारत से मिला था। इस बड़े महाद्वीप के कुछ भाग समुद्र में डूब गए। मध्यसागर इसी प्रकार बना।

अफ्रीका का बड़ा रेगिस्तान, सहरा, और अरब देशों के रेगिस्तान एक श्रृंखला की कड़ियाँ हैं। अफ्रीका के पूर्वी तट और मौरीशस के पशुवर्ग और वनस्पतियाँ पश्चिमी भारत से मिलती-जुलती हैं। एक ही प्रकार का शेर सौराष्ट्र और पूर्वी अफ्रीका में मिलता है। हाथी भी भारत और अफ्रीका में ही मिलता है। फलों में आम भी बहुत समय से इन्हीं दो महाद्वीपों में मिलता है। वनस्पतियों और पशु-वर्ग की एकता तो आस्ट्रेलिया तक से जा मिलती है।

अफ्रीका महाद्वीप के चारों ओर पहाड़ों की श्रृंखलाएँ हैं। इस कारण समुद्र से आने वाली हवाएँ टकराकर तटवर्ती क्षेत्र पर ही बरस पड़ती हैं और महाद्वीप के बीच का भाग खुश्क रह जाता है। अफ्रीकी रेगिस्तान, सहरा, विश्व का सबसे बड़ा रेगिस्तान है। यह ३० लाख वर्गमील, अर्थात् समस्त यूरोप के बराबर है और अतलांतिक महासागर से लेकर स्वेज़ नहर तक फैला हुआ है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

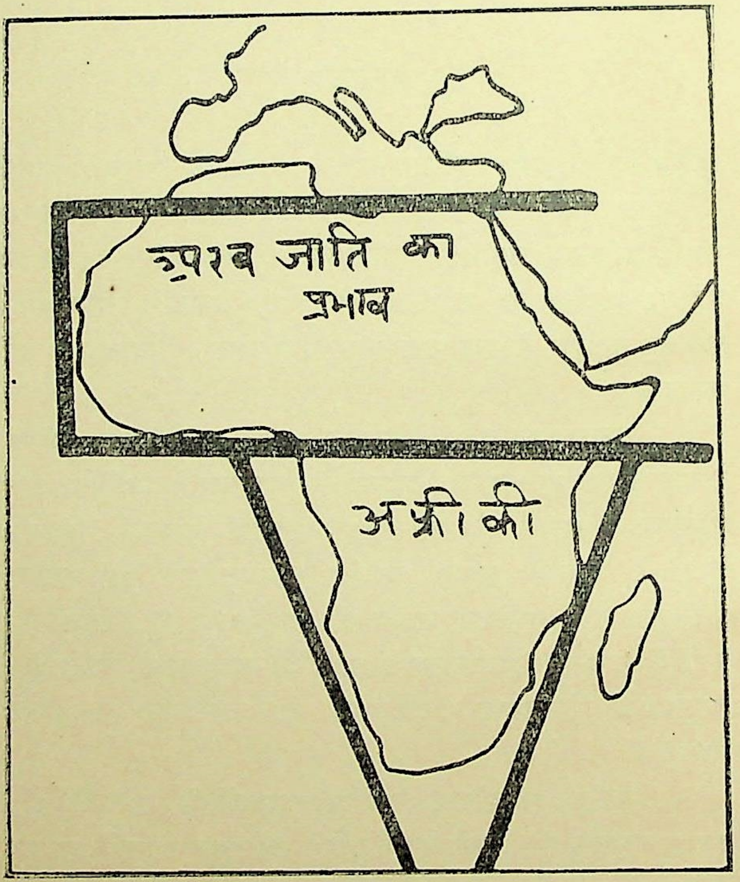

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पर सारे-का-सारा सहरा रेगिस्तान नहीं है; बीच में मीलों तक पथ-रीली ज़मीन है। ऊँचे-ऊँचे पहाड़ हैं, जिनमें से कुछ ज्वालामुखी पर्वत भी हैं। अशग्गा पर्वतमाला इसी प्रकार की है। सूखी हुई नदियों के चिह्न भी मिलते हैं।

इसी रेगिस्तान ने अफ्रीका महाद्वीप को दो भागों में बाँट दिया है। सहरा के उत्तर में एक चौकोर आकार का टुकड़ा है और दक्षिण में एक तिकोन। वैज्ञानिकों के अनुसार अफ्रीका में रेगिस्तान बढ़ रहा है और जंगल घटते जा रहे हैं। रेगिस्तान से उत्पन्न होकर बड़े-बड़े टिड्डी-दल उड़ते फिरते हैं। कुछ टिड्डी-दल तो इतने बड़े होते हैं कि इनका क्षेत्रफल ६० वर्गमील से भी अधिक होता है। महाद्वीप के ट्रॉपीकल भाग में तेतज़ी नामक एक मक्खी मिलती है, जो मनुष्यों और पशुओं को मार डालती है। एक चौथाई भाग में जंगल हैं; जहाँ जंगल खत्म होते हैं, वहाँ मैदान और रेगिस्तान शुरू होते हैं। आबादी कम होती जाती है। समस्त महाद्वीप में क़ाहिरा ही एक ऐसा नगर है जिसकी जन-संख्या १० लाख से अधिक है। अफ्रीका में सड़कें और रेलें बहुत थोड़ी हैं।

अफ्रीका यद्यपि यूरोप से तिगुना है, परन्तु जहाँ यूरोप का समुद्र-तट २२,००० मील है, वहाँ अफ्रीका का समुद्र-तट केवल १६,००० मील है; बन्दरगाहें हैं ही नहीं, या कम हैं और काम लायक नहीं हैं। इसलिए व्यापार के लिए विशेष सुविधाओं का अभाव है।

विश्व की सबसे बड़ी कई नदियाँ इसी महाद्वीप में हैं, परन्तु इनमें जहाज़रानी नहीं हो सकती, क्योंकि समुद्र में गिरने से पूर्व ये बड़े-बड़े पहाड़ों को काटती हैं और विशाल झरनों और प्रपातों का रूप धारण कर लेती हैं।

मिस्र की सभ्यता लगभग ४००० वर्ष पुरानी है। इस देश का यूरोपीय लोगों को पूरा ज्ञान था। रोम के नरेशों ने अपनी सेनाएँ भेजकर उत्तरी अफ्रीका में अपना साम्राज्य स्थापित करने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

का प्रयत्न किया परन्तु यूरोपीय लोग विशाल रेगिस्तान को पार न कर सके। नीरो भी फशोडा पर जाकर रुक गया। साइरेनायिका में मिले खण्डहर आज भी रोमन लोगों की बर्बरता का प्रमाण देते हैं।

कई शताब्दियों के बाद अरब लोग पूर्व से बढ़े और अतलांतिक तट तक पहुँचे। उत्तरी अफ्रीका पर आज भी अरब संस्कृति का बड़ा प्रभाव है। यहाँ की जन-संख्या प्रायः अरब है; प्रायः इनके रक्त में अरबी रक्त का सम्मिश्रण है। पश्चिमी भूमध्य सागर पर कई सौ वर्ष तक बर्बर जाति का आधिपत्य रहा है। ये लोग यूरोपीय नाविकों को पकड़कर पहाड़ी घाटियों में ले जाकर बन्दी बना लेते थे। इसलिए यूरोपीय नाविक इस ओर आते हुए घबराते थे और अपने नाविकों को छुड़ाने के लिए कई यूरोपीय राज्यों ने अपने प्रतिनिधि तांजीर में रखे थे।

उन्नीसवीं शताब्दी तक तो अरब या तुर्क ही इस क्षेत्र पर राज्य करते रहे और यूरोपीय साम्राज्यवादी देशों ने इन्हें तुर्की से छीनकर ही अपने उपनिवेशों की स्थापना की।

यूरोपीय साम्राज्यवाद के स्थापित करने का सेहरा एक प्रकार पुर्तगाल और स्पेन के सिर पर है। नाविक राजकुमार हेनरी इस बात पर तुला था कि भारत तथा चीन का सामुद्रिक रास्ता ढूँढ़ निकाले। इसी रास्ते की तलाश करते-करते पुर्तगाली और स्पेनीय नाविक अमरीका जा पहुँचे और मेक्सिको पर अपना आधिपत्य जमाया। यहाँ के नागरिकों ने बन्दी होने से मरना बेहतर समझा। १५ वर्ष के भीतर हैती की जन-संख्या दस लाख से घटकर केवल साठ हजार रह गई। बर्थालोम्यू डे लास कसास नामक एक पादरी को मेक्सिको निवासी गुलामों पर अत्याचार देखकर तरस आया और उसने १५१६ ई० में स्पेन के नरेश से प्रार्थना की कि अमरीका में बसने वाले स्पेन के जागीरदारों को यह अधिकार हो कि वे अफ्रीका से गुलाम लाकर उनसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अपनी ज़मीनों पर काम लें। इस प्रस्ताव की स्वीकृति के कारण करोड़ों अफ्रीकियों को गुलाम बनाकर अफ्रीका से बाहर ले जाकर यूरोपीय देशों ने अपने हाथ काले किये। जब उस पादरी को कुछ वर्षों बाद अपने प्रस्ताव का वास्तविक रूप पता लगा, तो शर्म के मारे वह हैती में एक मठ (मोनेस्ट्री) में भर्ती हो गया।

यूरोपीय लोगों ने अफ्रीका के लोगों से बिलकुल जानवरों का-सा व्यवहार किया। १५१७ ई० में स्पेन के नरेश ने एक यूरोपीय को एक अनुमति-पत्र दिया कि वह ४००० अफ्रीकी गुलाम मध्य अमरीका में बेच सके। एक इटालियन ने उस अनुमति-पत्र को खरीदकर, आगे एक पुर्तगाली कम्पनी को बेच दिया। पुर्तगाली कम्पनी ने १०,००० गुलाम मध्य अमरीका भेजे—इस खयाल से कि दस हज़ार लेकर चलेंगे तभी तो चार हज़ार जीवित पहुँचेंगे। अगले ३०० वर्षों में कितने अफ्रीकियों को स्वयं या अरब व्यापारियों का सहायता से गुलाम बनाकर अफ्रीका से बाहर ले जाया गया, इसका किसी ने हिसाब नहीं रखा। डॉ० लिविंस्टन ने एक जगह लिखा है कि हर वर्ष साढ़े तीन लाख गुलाम अफ्रीका से बाहर ले जाये जाते थे। कार्डीनल लवेज़री ने अनुमान किया था कि प्रति-वर्ष २० लाख अफ्रीकी बाहर ले जाये गए। अठारहवीं शताब्दी के अन्त में ब्रिस्टल बन्दरगाह में २०० जहाज़ थे जो केवल गुलामों को अफ्रीका से अन्य देशों में ले जाने का काम करते थे। इन जहाज़ों में एक फेरे में ४७,०८० व्यक्ति भरे जाते थे। यह व्यापार गत शताब्दी के आरम्भ तक चलता रहा। पहले नेपोलियन न इसे बन्द किया। फिर १८०७ ई० में ब्रिटेन ने भी इसे बन्द किया। व्यापार फिर भी चलता रहा। ब्राज़ील ने तो १८८८ में इस व्यापार पर प्रतिबन्ध लगाया। किन्तु बेलजियम के नरेश लियोपोल्ड ने कांगो पर अपना आधिपत्य जमाकर पुर्तगाली बस्ती अंगोला से गुलाम भरती किये। पुर्तगाली बस्तियों में अब भी कभी-कभी गुलामों के खरीदने और बेचने के उदाहरण मिल जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

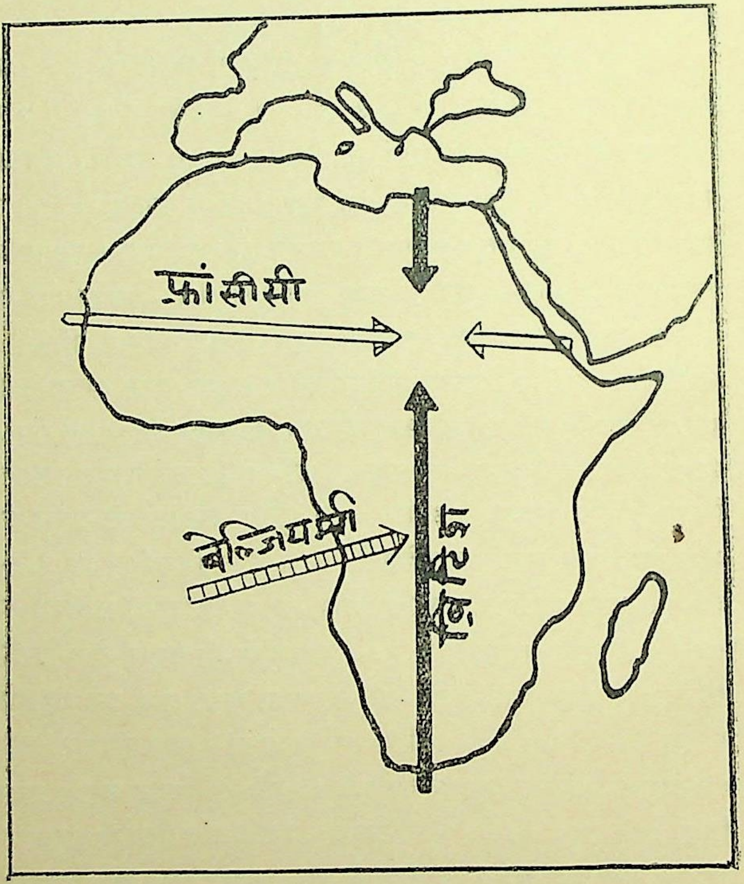

यूरोपीय साम्राज्यवाद का विस्तार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आरम्भ में यूरोपीय लोग गुलामों के व्यापार के लिए ही अफ्रीका पहुँचे और क्योंकि उस समय गुलाम केवल अमरीका ही भेजे जाते थे इसलिए यूरोपीयों की निगाह अफ्रीका के पश्चिमी तट पर ही रही।

हैनरी के जहाज़ १४५६ ई० में केप वर्डी, अजोर और कनेरी टापुओं तक पहुँचे, १४७१ में साओथाम और प्रिंसिप द्वीपों तक। फिर गिनी और अंगोला तक पहुँचे। १७ वर्ष बाद एक बर्थालोम्यू डियेज़ नामक नाविक ने केप का चक्कर लगाया। इसके दस वर्ष बाद वास्कोडिगामा, भारतीय नाविकों की मदद से, भारत पहुँचा। पुर्तगालियों ने मौरीशस और मौज़मबीक पर कब्ज़ा किया। इसके बाद ही ब्रिटिश, फ्रांसीसी और डच जहाज़ भारत आने लगे। रास्ते में तट के साथ-साथ जिस स्थान पर जिसका बस चला, उसने अपना झंडा गाड़ दिया और कब्ज़ा कर लिया। उनमें आपसी झगड़े भी होते थे।

जब उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भ में एशिया का पूर्णतया बटवारा हो गया, तब यूरोपीय देशों ने अपना ध्यान अफ्रीका की ओर किया। ब्रिटेन दक्षिण से क़ाहिरा की ओर बढ़ा; केपटाउन से क़ाहिरा तक रेल की योजना बनाई; नियासालैण्ड और रोडेसिया पर कब्ज़ा किया। बसुटोलैण्ड, बेचुआनालैण्ड और स्वाज़ीलैण्ड पर भी अपना आधिपत्य जमाया। फ्रांसीसी भूमध्यरेखा के साथ-साथ बढ़े। बेलजियम-नरेश ने कांगो को हथिया लिया। पुर्तगाली अंगोला और मौज़मबीक लिये बैठे रहे। जर्मनी ने भी दक्षिण-पश्चिमी अफ्रीका, तांगानीका, कैमेरुन और तोगोलैण्ड पर कब्ज़ा किया। स्वयं कैसर ने तांजीर का दौरा किया। तांगानीका पर जर्मन आधिपत्य जमता देखकर अंग्रेज़ों ने सोमालीलैण्ड, यूगंडा और केनिया पर कब्ज़ा किया। उधर इटली ने भी लिबिया, ऐरीट्रीया और सोमालीलैण्ड पर कब्ज़ा किया; इथियोपिया से युद्ध भी किया, परन्तु हार खाई।

जब प्रथम विश्व-युद्ध आरम्भ हुआ तब समस्त अफ्रीका में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

केवल लाइबेरिया और इथियोपिया ही स्वतंत्र देश थे। युद्ध की समाप्ति पर जर्मनी के सारे उपनिवेशों को नियोजन (मैंडेट) की शक्ल में बाँट दिया गया। रुअंडा ऊरुंडी बेलजियम को मिला। तांगानीका और दक्षिण-पश्चिमी अफ्रीका ब्रिटेन को मिले। कैमेरुन और तोगोलैण्ड का कुछ भाग ब्रिटेन को मिला, कुछ फ्रांस को। साम्राज्यवादियों की भूख फिर भी शान्त न हुई। १६३६ में इटली ने इथियोपिया को भी हड़प लिया।

जब द्वितीय विश्व-युद्ध आरम्भ हुआ तो समस्त महाद्वीप में केवल लाइबेरिया ही एक स्वतन्त्र देश रह गया था। ब्रिटेन के पास १४ बस्तियाँ और 'सुरक्षित' देश थे। चार भूतपूर्व जर्मन नियोजन (मैंडेट्स) भी थे। फ्रांस के पास तो अफ्रीका का सबसे बड़ा साम्राज्य था, जिसका क्षेत्रफल ४,०००,७८४ वर्गमील, अर्थात् फ्रांस के क्षेत्रफल से १८ गुना है।

द्वितीय विश्व-युद्ध में अफ्रीका की भूमि पर घमासान का युद्ध हुआ। फ्रांस की अस्थायी सरकार उत्तरी अफ्रीका गई। जर्मन और इटालियन सेनाएँ उतरीं। ब्रिटिश और अमरीकी भी यहीं उतरे। स्वाभाविक था कि अफ्रीका-निवासी पूछते: यदि यह सब कुछ जनतन्त्र की सुरक्षा के लिए हो रहा है, तो हमें भी जनतन्त्र का लाभ प्राप्त होना चाहिए।

आज समस्त महाद्वीप में ५० लाख गोरे लोग २० करोड़ अफ्रीकियों और उत्तरी अफ्रीका के अरबों पर शासन करते हैं। अफ्रीकियों की दशा बड़ी दयनीय है। उनके लिए रंगभेद के कानून हैं। बग़ैर 'पास' या आज्ञा के अपने देश में अपनी इच्छानुसार न रह सकते हैं, न चल-फिर सकते हैं। उनके लिए रेल गाड़िया अलग हैं, बैठने के लिए बेंच अलग, दूकानें अलग। यूरोपीय अफ्रीकी को इन्सान नहीं समझते; और अफ्रीकी अपने घर में परदेशी बन गया है। इसका मुख्य कारण तो इस महाद्वीप का अथाह धातु-धन है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गत ६० वर्षों में कम-से-कम ५६ अरब रुपये का माल अफ्रीका से बाहर भेजा गया है। महाद्वीप में २७०० मील लम्बी और ३०० मील चौड़ी एक खान है जो बेल्जियमी कांगो से आरम्भ होकर दान्ती की शकल में रोडेसिया और ट्रांसवाल से गुज़रती हुई, दक्षिण-पश्चिमी अफ्रीका पहुँचती है। इस खान में सोना, हीरे, जवाहरात, तांबा, लोहा, कोबाल्ट, वैनेडियम, वंग, प्लेटीनम, इत्यादि इतनी अधिक मात्रा में मिलते हैं कि विश्व का ५५ प्रतिशत सोना, ६० प्रतिशत हीरे-जवाहरात, २२ प्रतिशत तांबा, ५५ प्रतिशत क्रोम, २३ प्रतिशत मैंगनीज, ८५ प्रतिशत कोबाल्ट, ७० प्रतिशत वैनेडियम और इस अणु-युग में ६० प्रतिशत यूरेनियम इसी महाद्वीप में मिलता है। और यह बात भी याद रखने योग्य है कि अभी तक इस महाद्वीप का जियोलॉजिकल सर्वे नहीं किया गया है। विश्व के ४० प्रतिशत बिजली उत्पादन के साधन इसी महाद्वीप में हैं। यूरोप के साधनों से केवल १२.५ प्रतिशत और अमरीका के साधनों से १५ प्रतिशत बिजली तैयार हो सकती है। एक जर्मन लेखक के अनुसार अफ्रीका में बिजली उत्पादन के साधन इतने हैं कि शायद भविष्य में अफ्रीका की बिजली तार द्वारा यूरोप भी भेजी जा सके। इसी धन को बटोरने के लिए यूरोप और अमरीका अफ्रीका पर टूटकर पड़ रहे हैं। परन्तु अब अफ्रीकी भी जागृत हो गए हैं। इस जागृति को रोकने के लिए यूरोपियनों ने रंगभेद नीति अपनाई। ज्यों-ज्यों रंगभेद नीति कड़ी होती जा रही है त्यों-त्यों अफ्रीकी जागृत होते जा रहे हैं और साम्राज्यवाद का अन्त भी समीप आता जा रहा है।

जून महीने के बाद सहरा रेगिस्तान के दक्षिण में दस-दस फुट ऊँची घास उगती है। यह अक्तूबर तक सूख जाती है। तब कोई यदि एक दियासलाई दिखला दे, तो मीलों तक अग्नि के स्तम्भ-ही-स्तम्भ दिखलाई पड़ते हैं। सारा जंगल काफूर की तरह भस्म हो जाता है। इसी प्रकार अफ्रीका में स्वतन्त्रता की आग भी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भड़क रही है। मेरी धारणा है कि ४०-५० वर्ष के भीतर समस्त अफ्रीका स्वतन्त्र हो जायगा।

गत दस वर्षों में भारत तथा दूसरे एशियाई देशों से आने वाली स्वतन्त्रता की हवाओं ने अफ्रीकियों के कानों में फूँक मार दी है कि 'एशियाई देश स्वतंत्र हो गए हैं, अब तुम भी खड़े हो जाओ।' अफ्रीका के सब लोग—३ फुट ऊँचे पिगमी से लेकर ७ फुट ऊँचे तुसी और मसाई और अफ्रीकी और अरब—तुल पड़े हैं कि स्वतन्त्रता लेकर ही रहेंगे। मिस्र, लिबिया, सूडान, मोरक्को और ट्यूनीसिया स्वतन्त्र हो गए हैं। घाना (गोल्डकोस्ट) राष्ट्रमण्डल का पूर्णतया स्वतन्त्र अफ्रीकी सदस्य है। स्वतन्त्रता-संग्राम जारी है। फ्रांस उत्तरी अफ्रीका में—अलजेरिया में—उलझा पड़ा है। ब्रिटेन केनिया में माऊ माऊ से अभी तक लोहा ले रहा है। यूगंडा, बेचुआनालैण्ड और दक्षिण-पश्चिमी अफ्रीका, कहीं भी चैन नहीं है। मध्य अफ्रीका के यूरोपीय दक्षिण अफ्रीका की रंगभेद नीति को अपनाकर अपना प्रभुत्व जमाये रखने की फिक्र में हैं।

अफ्रीका महाद्वीप और भारत समुद्र-पार के पड़ोसी हैं। पारस्परिक सम्बन्ध बहुत पुराना है। हज़ारों वर्ष पूर्व इस महासागर के दोनों तटों पर बसने वाले लोग व्यापार करते थे और इन्हें एक-दूसरे का पूरा ज्ञान था। एक विशेषज्ञ का तो कहना है कि आठ हज़ार वर्ष पूर्व प्रवासी भारतीयों ने अपनी कला और संस्कृति का परिचय मिस्र को दिया था। इस कथनानुसार मिस्र के मूल लोग अपने-आप को सूर्य-वंशी कहते थे। ये शायद भारत ही से आये थे।

फेनीसिया और चैलडिया की नींव भी शायद द्राविड़ भारतीयों (पांडिया और चोलाओं) ने ही रखी थी। इन्हीं लोगों ने बाद में दक्षिणी रोडेशिया में मशोना नामक स्थान पर पहुँचकर वहाँ की खानों से सोना निकालना शुरू किया।

एक हज़ार वर्ष हुए, एक अरब लेखक, अबुलहसन मसूदी,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

न लिखा था कि उस समय मौज़मबीक तट पर कई स्थान थे, जहाँ पर ईरानी, भारतीय और चीनी व्यापारी सोने और हाथी-दाँत का व्यापार करते थे। भारतीय व्यापारी गेहुँए रंग के थे, इनके बाल काले थे, ये चोटी रखते थे और गाय की भक्ति करते थे। तत्कालीन द्राविड़ भाषा और मध्य अफ्रीका की बारनी भाषा (जिसे कारनी भी कहते हैं) बहुत मिलती-जुलती है।

मध्य अफ्रीका के प्रसिद्ध जिमबाबुई खण्डहरों से प्रतीत होता है कि वहाँ द्रविड़ों की वस्ती थी। शिव और दुर्गा-पूजा के चिह्न भी मिले हैं। कुछ अवशेष जैसे नंदी बैल और त्रिशूल, जो केप टाउन और बुलवायो के अजायबघरों में रखे हैं, इस तथ्य की पुष्टि करते हैं। बान्तू जाति का वर्षा-पक्षी साँप लिये हुए गरुड़ है। येनांयेगा गुफाएँ, जिनके छत और फर्श भी हैं, शायद चिन्तन का स्थान थीं। इतिहास साक्षी है कि सोकोतरा, जंजीबार और अफ्रीका के पूर्वी तट पर द्राविड़ भारतीयों की बस्तियाँ थीं।

भारत में मुस्लिम राज्य की स्थापना के बाद बहुत सारे अफ्रीकी उत्तर भारत आते रहे—कुछ सैनिक बनकर, कुछ गुलाम बनकर। बंगाल के सुलतान रुकनउद्दीन बरबक (१४६०-७६ ई०) के दरबार में आठ हज़ार अफ्रीकी थे। रुकनउद्दीन के देहावसान के १२ वर्ष बाद इन अफ्रीकियों ने विद्रोह किया और सुलतान को मार डाला। फिर एक अफ्रीकी इन्दिल खान ने विद्रोहियों के नेता को मार दिया। तब सुलताना ने इस अफ्रीकी को सैफउद्दीन फिरोज़ का नाम देकर गद्दी पर बिठा दिया। कुछ वर्ष बाद जब बंगाल राज्य में फिर विद्रोह हुआ तो ये अफ्रीकी, जिन्हें शिदी कहते थे, बंगाल छोड़कर जौनपुर और दिल्ली चले आए। यहाँ से गुजरात, दक्षिण भारत, हैदराबाद इत्यादि में फैल गए। जांजीरा के शिदी प्रसिद्ध नाविक हुए हैं। आज भी सौराष्ट्र के जंगलों में लगभग तीन हज़ार शिदी रहते हैं, जो भारतीय नागरिक हैं, परन्तु इनके डील-डौल से और इनके रंग, उभरे होंठ और गाल तथा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

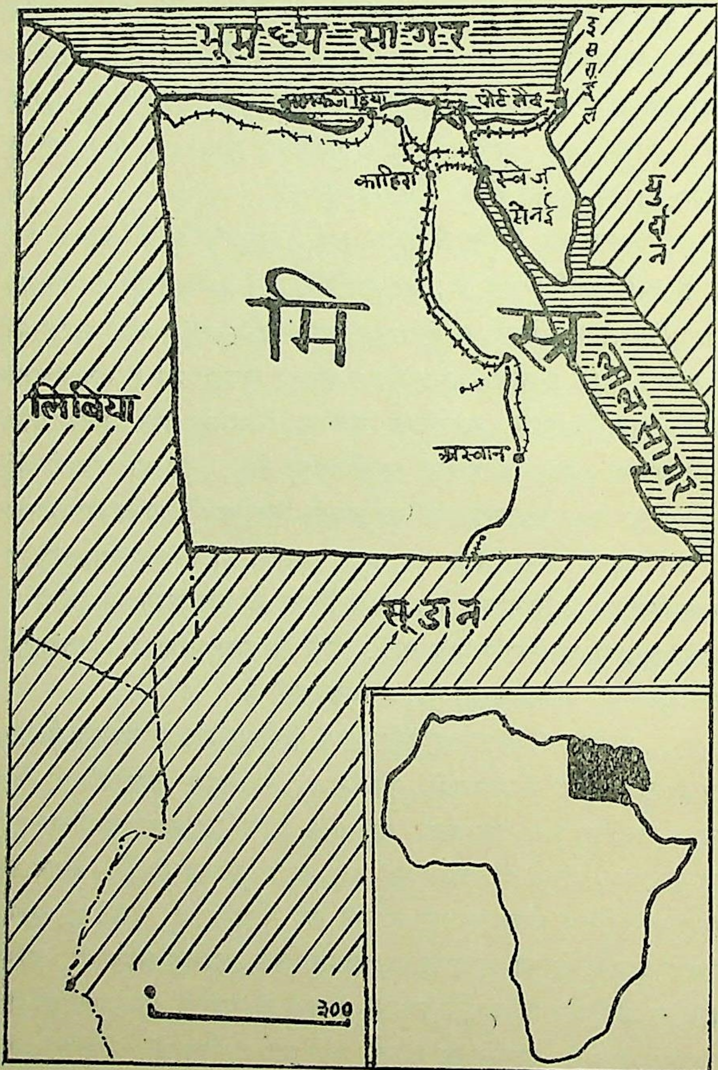

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मिस्र

मिस्र उत्तरी अफ्रीका का प्रमुख स्वतन्त्र अरब देश है, राजधानी क़ाहिरा है। क्षेत्रफल ३८६,१९८ वर्गमील है और जनसंख्या २२,४६९,००० । इनमें लगभग ९० प्रतिशत मुसलमान हैं और १० प्रतिशत कोप्ट्स हैं (जो चौथी शताब्दी में बने मिस्री ईसाइयों की औलाद हैं)। कई शताब्दियों तक इस देश पर अरबों का राज्य रहा, फिर तुर्की का। तुर्की साम्राज्य के कमज़ोर पड़ने पर १८८२ ई० में ब्रिटेन ने इस पर कब्ज़ा कर लिया। स्वेज़ नहर देश के बीच से गुजरती है। इस नहर के कारण देश का भौगोलिक महत्त्व बहुत भारी है। १९५६ में नहर के प्रश्न पर ब्रिटेन, फ्रांस और इजराइल ने मिस्र पर आक्रमण किया।

१९५२ तक तो मिस्र पर नरेश फारूक़ का शासन था। ५००० दरबारियों ने सारी अच्छी और उपजाऊ भूमि पर कब्ज़ा कर रखा था। १८० कुटुम्बों के हाथ में १,५००,००० एकड़ उपजाऊ भूमि थी। ये दरबारी ऐसे ही रहते थे जैसे भारतीय रजवाड़े। जुलाई सन् १९५२ में क्रान्ति हुई जिसमें फारूक़ को गद्दी से उतार दिया गया और उसकी सम्पत्ति पर देश की सरकार ने अधिकार कर लिया। फारूक़ की ३००,००० एकड़ की जागीर और उसके दरबारियों की जागीरों को बगैर भूमि वाले फल्लाहीन को बाँट दिया गया। मिस्र का अधिकांश भाग रेगिस्तान है और जनसंख्या का अधिकांश भाग नील घाटी और डेल्टा में रहता है जो केवल १३,००० वर्गमील है। गत ३०-४० वर्षों में बड़ी-बड़ी योजनाएँ बनी हैं। जिनके कारण कपास, जो निर्यात का ७५ प्रतिशत भाग है, गेहूँ और मक्की की उपज में बड़ी वृद्धि हुई है।

देश का विधान गणतान्त्रिक है। मिस्र पंचशील नीति का अनुयायी है और वैदेशिक नीति भारत की नीति से मिलती-जुलती है। दोनों में मैत्री है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

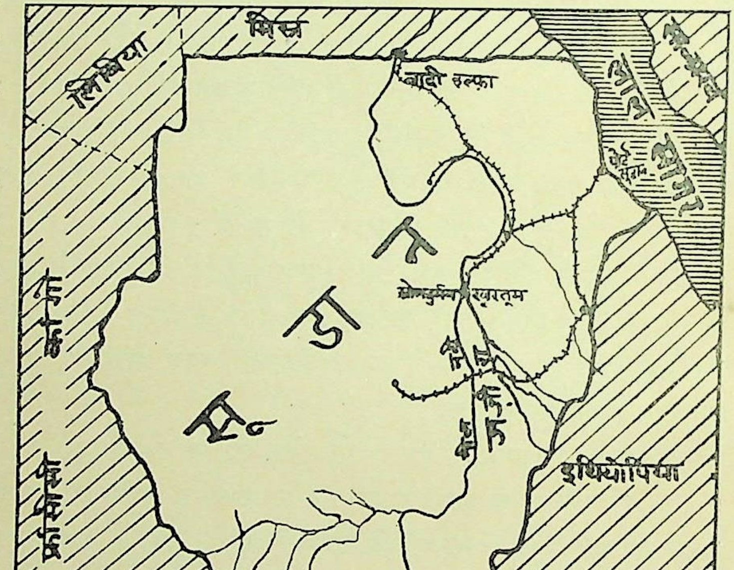

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सूडान

सूडान ('काले लोगों का') देश वास्तव में लाल सागर से लेकर अतलान्तिक महासागर तक फैला हुआ है। उत्तर में सहारा रेगिस्तान है और दक्षिण में ट्रापीकल जंगल। इसके बड़े भाग पर तो फ़्रांस का कब्ज़ा है। परन्तु आम-तौर पर सूडान उस स्वतन्त्र देश को कहते हैं जो मिस्र के दक्षिण में है और जो समस्त भारत से थोड़ा-सा ही छोटा है, क्षेत्रफल ९६७,५०० वर्गमील, जनसंख्या १०,०००,००० है। राजधानी ख़रतूम है। १८२०-२२ में मिस्र के नरेश मुहम्मद अली ने इस देश पर कब्ज़ा कर लिया था, परन्तु जब मिस्र का शासन ढीला पड़ा तब महदी ने विद्रोह किया। लार्ड किचनर ने १८९८ में फिर सूडान पर कब्जा कर आंग्ल-मिस्री सम्मिलित शासन स्थापित किया। १९५२ में जब अंग्रेज़ मिस्र से चलते बने तब वे सूडान छोड़ने पर भी तैयार हुए। देश को अपने भविष्य का फैसला करने का अधिकार मिला कि मिस्र के साथ रहना है, या स्वतन्त्र होना है। भारतीय निगरानी में चुनाव हुए और १ जनवरी, १९५६ को देश स्वतन्त्र हुआ।

देश के उत्तरी भाग में, जहाँ नील नदी सिंचाई करती है, ७,०००,००० की जनसंख्या में से ९५ प्रतिशत तो अरब मुसलमान हैं, परन्तु दक्षिणी भाग में, जहाँ काश्त वर्षा से ही होती है, ३,०००,००० अफ्रीकी रहते हैं। ये प्रायः ईसाई हैं।

उत्तरी सूडान में बड़ी उपज होती है। जज़ीरा योजना के अधीन ५,०००,००० एकड़ ज़मीन (खरतूम के पास 'नीले' और 'सफेद' नील के संगम के उत्तर में) है। इस जमीन में काश्त होती है। ५,००० मील लम्बी सिंचाई करने वाली नहरें हैं। १००,००० एकड़ में तो केवल खाद्य पदार्थ उत्पन्न होते हैं। कपास खूब होती है। सूडान सरकार प्रतिवर्ष इस योजना से २३।। करोड़ रु० कमाती है। १३ करोड़ निर्यात-दर से मिलता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

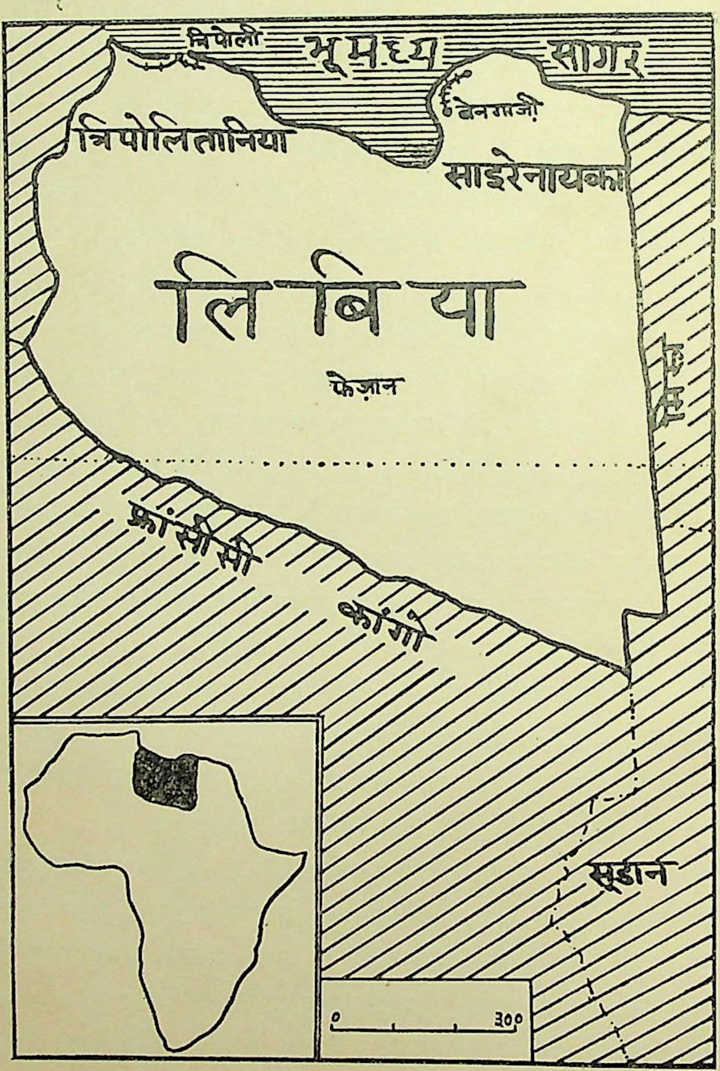

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लिबिया

लिबिया देश उत्तरी अफ्रीका में मिस्र और ट्यूनीसिया के बीच स्थित है। क्षेत्रफल ६७९,३५८ वर्गमील, जनसंख्या १,०९१,८३० और राजधानी त्रिपोली है। देश के पूर्वी भाग में साइरेनायका प्रान्त है और पश्चिमी भाग में त्रिपोलितानिया है। दोनों के बीच सैकड़ों मीलों तक एक विशाल रेगिस्तान है। देश का पश्चिमी भाग उपजाऊ है। यहाँ यूरोपीय रहते हैं।

लिबिया और यूरोप का सम्बन्ध पुराना है। यूनानी इतिहासज्ञ होमर ने लिखा है कि उसके समय में यह देश बहुत उपजाऊ था। उन्नीसवीं शताब्दी में यह देश तुर्की साम्राज्य का भाग बन गया। परन्तु जब दूसरे यूरोपीय देशों ने अफ्रीका के भिन्न-भिन्न भागों पर अधिकार कर लिया तो इटली ने, १९१२ में, लिबिया को हड़प लिया; और जब द्वितीय विश्वयुद्ध में ब्रिटिश और भारतीय सेनाएँ उत्तरी अफ्रीका में उतरीं तो साइरेनायका के इदरिस (जो सेनुसी जाति का प्रतिष्ठित अमीर है) से यह वायदा किया गया कि लिबिया इटली को वापस नहीं दिया जायगा। महायुद्ध की समाप्ति पर लिबिया के भविष्य का प्रश्न उठा। यूरोपीय देश तो चाहते थे कि इस पर संयुक्त-राष्ट्र या किसी यूरोपीय देश का प्रन्यास (ट्रस्टीशिप) हो। परन्तु भारत और दूसरे अरब-एशियाई देशों ने लिबिया के लिए स्वतन्त्रता की माँग की। परिणामत: २४ दिसम्बर, १९५१ को लिबिया स्वतन्त्र देश घोषित किया गया। इदरिस पहला नरेश बना। देश का संविधान संयुक्त-राष्ट्र की सहायता से बना है। इदरिस के अधीन एक निर्वाचित लोकसभा है और एक सीनेट है। जब लिबिया इटली के अधीन था तब शिक्षा और आर्थिक विकास के क्षेत्रों में बहुत पिछड़ा हुआ था (इतने बड़े देश में केवल १७,००० वर्गमील में खेती होती थी)। संयुक्त-राष्ट्र की सहायता से देश में तेजी से प्रगति हो रही है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

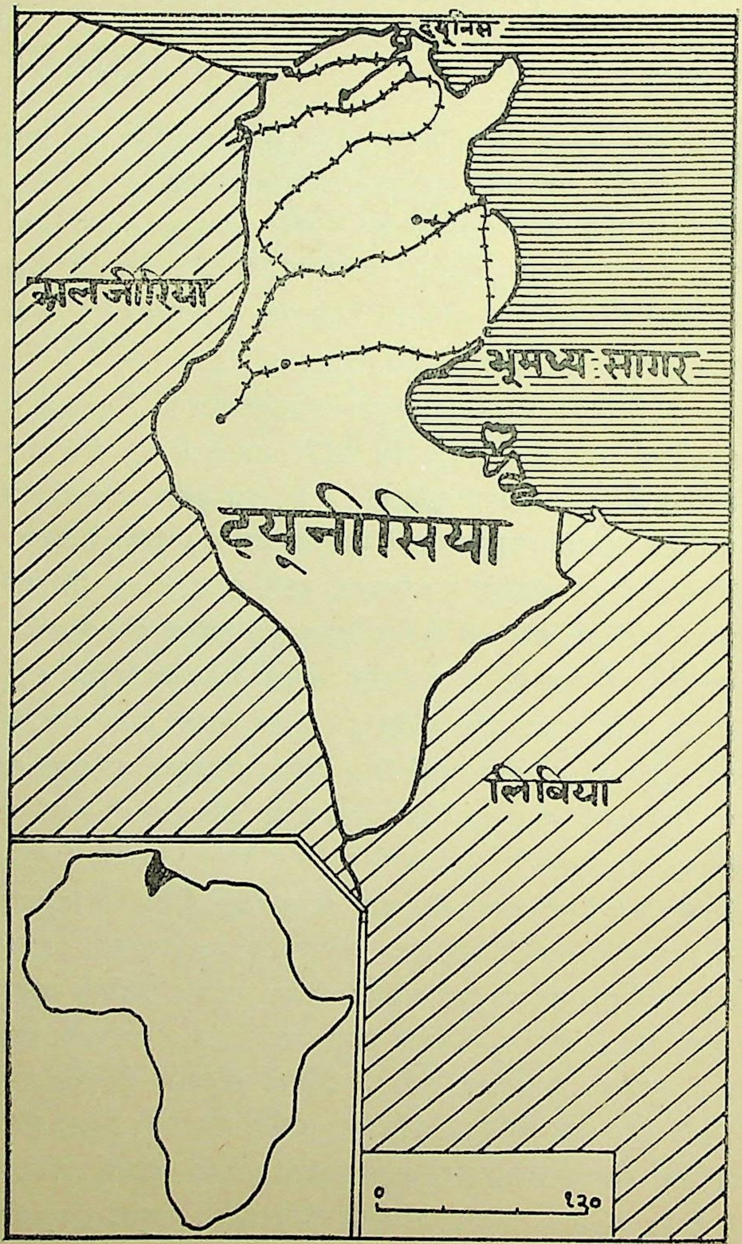

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ट्यूनीसिया

ट्यूनीसिया देश उत्तरी अफ्रीका में भूतपूर्व फ्रांसीसी उपनिवेशों में सबसे छोटा है। क्षेत्रफल ४८,१९५ वर्गमील, जनसंख्या ४,०००,००० और राजधानी ट्यूनिस है। सन् १८८१ में फ्रांस ने इसे अपने कब्ज़े में लिया था। लिबिया और अलजीरिया के बीच में बसे इस देश में लगभग २८०,००० यूरोपीय रहते हैं, आधे इटालियन और आधे फ्रांसीसी। दोनों ही अपनी-अपनी संख्या को बढ़ा-चढ़ाकर बतलाते हैं।

दूसरे विश्वयुद्ध में ट्यूनीसिया में पहले नाज़ी सेनाएँ उतरीं, फिर मित्र-राष्ट्रों की, जिनकी विजय हुई। जब युद्ध समाप्त हुआ तो ट्यूनीसिया निवासियों ने स्वतन्त्रता की माँग की। दंगे-फिसाद हुए। कई बार गोली चली। नेताओं को देश-निकाला मिला। कई बार फ्रांस ने स्वतन्त्रता देने का वायदा भी किया, परन्तु ट्यूनीसिया-स्थित प्रवासी फ्रांसीसियों द्वारा जोर पड़ने पर ये वायदे तोड़ दिये गए। अप्रैल, १९५३ में एक समझौता हुआ। इसके अनुसार फ़्रांस ने रक्षा और विदेशनीति इत्यादि को छोड़कर बाकी विषयों में ट्यूनीसिया को 'स्वतन्त्रता' देने का वायदा किया। २० मार्च १९५६ को ट्यूनीसिया पूर्णतया स्वतन्त्र हो गया।

ट्यूनीसिया की घटनाओं को समझने के लिए यह याद रखना आवश्यक है कि ट्यूनीसिया अरब देशों के नज़दीक है, इसलिए यहाँ आज़ादी की भावना दूसरे फ्रांसीसी उपनिवेशों से पहले जागृत हुई। दूसरी बात यह है कि राष्ट्रीय जीवन के सभी अंगों (नरेश 'बे' से लेकर साधारण मज़दूर तक) ने देश के स्वतन्त्रता-आन्दोलन में भाग लिया है। तीसरी बात, ट्यूनीसिया को नेता भी अच्छे मिल गए। इसके अलावा, 'रक्षित' देश होने के बहाने फ़्रांस ने भी स्वतन्त्रता की माँग को स्वीकार कर अपना पीछा छुड़ाया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

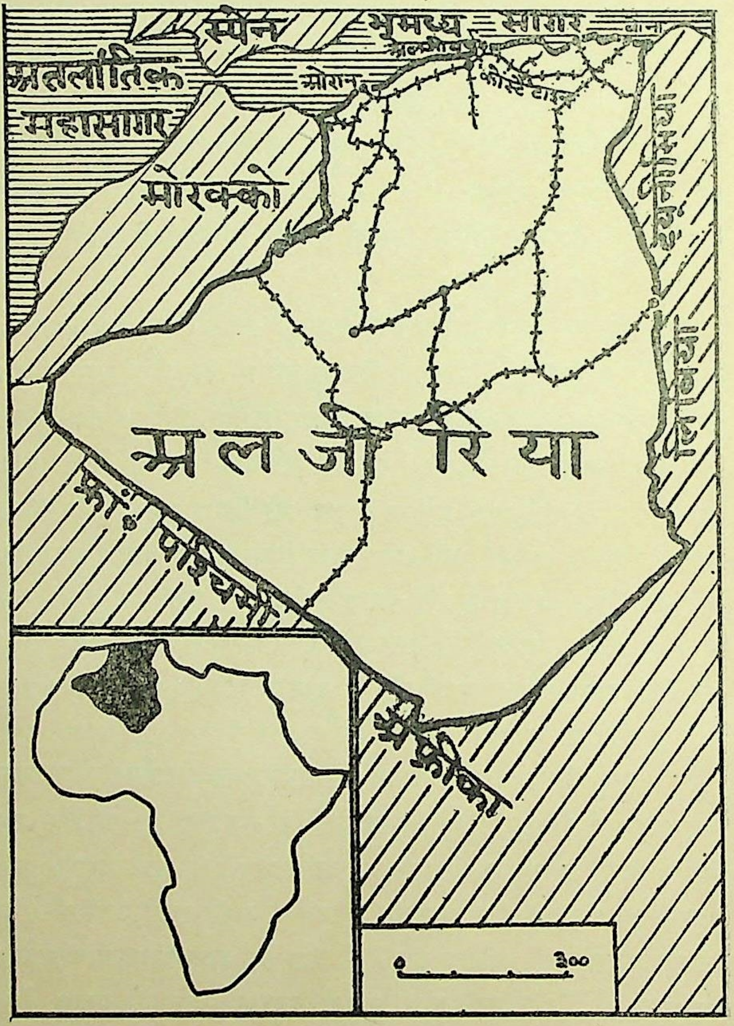

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अलजीरिया

प्राचीन काल से आधुनिक युग तक अलजीरिया एक बहुत उपजाऊ देश रहा है। रोमन साम्राज्यवाद के समय तो अलजीरिया इटली का प्रमुख खाद्य भण्डार था। १८३० में फ्रांस ने अलजीरिया पर कब्ज़ा कर लिया। देश का क्षेत्रफल ८४५,००० वर्गमील, जनसंख्या ६,०००,००० और राजधानी अलजायर है। उत्तरी अलजीरिया के तीन विभाग इस प्रकार हैं—ओरान, अलजायर और कौंस्टैंटाइन। भूमध्यसागर के तट के साथ-साथ बसे इन विभागों में ऐटलस पर्वतमाला की ढलानों पर लगभग १,०००,००० फ्रांसीसी रहते हैं। देश का आर्थिक जीवन-ढाँचा इनकी मुट्ठी में है। देश की १३०० बड़ी-बड़ी जागीरों में से अरब लोगों के कब्जे में केवल ५० हैं। देश में अंगूर पैदा होता है, जिनसे फ्रांसीसी आसव बनाते हैं। यदि घाटा हो तो पैरिस सरकार पूरा कर देती है (क्योंकि फ्रांसीसी अलजीरिया को 'फ्रांस का अंग' कहकर पुकारते हैं)। देश के उत्तरी भाग के कुछ प्रतिनिधि पैरिस की पार्लियामेण्ट में बैठते हैं। देश के दक्षिणी भागपर तो आरम्भ से ही, और विशेषतया १६०२ से, जब दक्षिणी अलजीरिया को भिन्न उपनिवेश बनाया गया, सैनिक शासन है।

गत सवा सौ वर्षों में फ़्रांसीसी साम्राज्यवादियों ने अलजीरिया की भाषा, संस्कृति और सामाजिक संगठन को तोड़ देने का भरसक प्रयत्न किया है। यदि आज भी किसी को अरबी भाषा में पढ़ाने के लिए स्कूल खोलना हो, तो आज्ञा मिलते-मिलते (यदि मिल जाय तो) दो वर्ष लग जाना स्वाभाविक है। द्वितीय महायुद्ध में अलजीरिया निवासियों के दिलों में आत्म-विश्वास जगा। उन्होंने दूसरे अरब देश-निवासियों से सम्बन्ध स्थापित किये और अलजीरिया में भी स्वतन्त्रता-संग्राम छेड़ा। यह संग्राम दूसरे अरब देशों के संग्राम में मिल गया है। परन्तु फ्रांसीसी साम्राज्यवाद देश को छोड़ने को तैयार नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

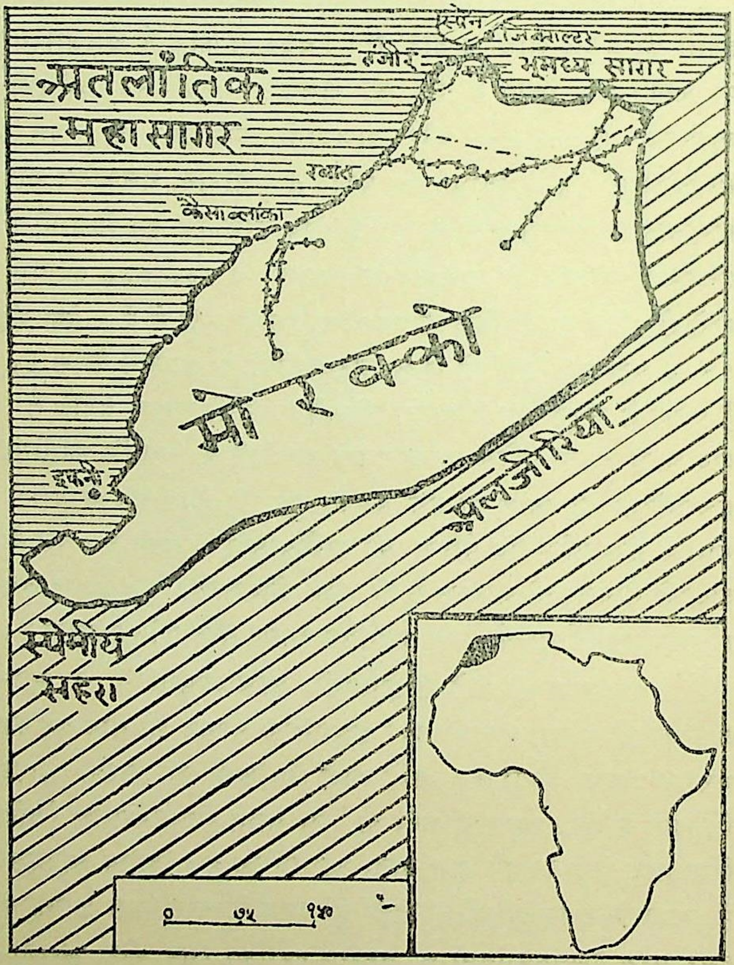

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मोरक्को

मोरक्को (अरबी में मर्राकिश कहते हैं) का क्षेत्रफल २१५,००० वर्गमील है, जनसंख्या ७,५००,००० और राजधानी रबात। देश अफ्रीका महाद्वीप के उत्तर-पश्चिमी कोने में बसा है। यहाँ दो जातियाँ हैं : बरबर (जिस जाति के लोगों ने ४५५ ई० में रोम को नष्ट किया था) और अरब (जो ८वीं शताब्दी में यहाँ आये)। यूरोपीय साम्राज्यवाद ने देश को तीन भागों में बाँटा। सबसे छोटे भाग का शासन अभी हाल तक अन्तर्राष्ट्रीय रहा है और सबसे बड़े भाग पर फ्रांस का कब्जा था। मोरक्को के अन्तर्राष्ट्रीय भाग का क्षेत्रफल २२५ वर्गमील, जनसंख्या ६५,००० और राजधानी अभी तक तंजीर रही है। अन्तर्राष्ट्रीय कमीशन पर ब्रिटेन, फ्रांस, अमरीका, रूस, और स्पेन के प्रतिनिधि बैठते रहे हैं।

उत्तर (भूतपूर्व स्पेनीय) मोरक्को का क्षेत्रफल १३,००० वर्गमील, जनसंख्या ३०,०००, और मुख्य नगर टेटुआन। हाल तक यहाँ पर स्पेनीय रेज़ीडेण्ट का बोलबाला रहा है। इसी भाग में क्यटा बन्दरगाह है, जो जिब्राल्टर के मुकाबिले में है। यहीं से फ्रैंको ने १९३६ में स्पेन पर धावा किया था। मोरक्को का सबसे बड़ा (दक्षिणी) भाग फ़्रांस के कब्ज़े में रहा। इसका क्षेत्रफल २००,००० वर्गमील, जनसंख्या ८,६००,००० और राजधानी रबात रही है। इस भाग पर फ्रांस ने १९१२ में कब्ज़ा किया था। १९३४-३७ में देश के इस भाग में विद्रोह हुआ। अपना प्रभुत्व जमाये रखने के लिए फ्रांस ने अरबों और बरबरों में दुश्मनी करवाई, और अगस्त १९५३ में अरबों के प्रमुख नेता सुलतान सिदी मुहंम्मद बिन यूसफ़ को देश से निकालकर मदगास्कर में बन्दी बनाया। स्वतन्त्रता-संग्राम जारी हुआ। इस संग्राम की ध्वनि संयुक्तराष्ट्र तक पहुँची। १९५६ में स्वतन्त्रता के आधार पर मैत्री-सन्धि करनी पड़ी। शीघ्र ही स्पेन को भी झुकना पड़ा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

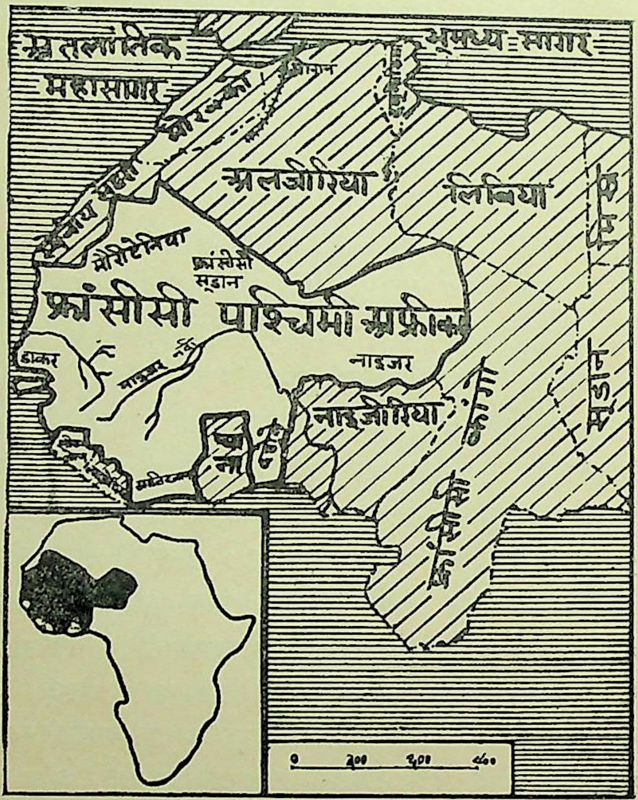

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

फ्रांसीसी पश्चिमी अफ्रीका

अफ्रीका के पश्चिमी तट के साथ-साथ अलजीरिया और लिबिया के दक्षिण में स्थित, फ्रांस का सबसे बड़ा उपनिवेश पश्चिमी अफ्रीका है। क्षेत्रफल १,८१५,७६८ वर्गमील, जनसंख्या १६,०००,००० और राजधानी डाकर है। यह देश भारत से ड्योढ़ा है। अधिक भाग में तो सहरा रेगिस्तान है जिसका धातु-धन अथाह है। सीरालोने, घाना, लाइबेरिया, नाइजीरिया इत्यादि तो इसके पेट में थैलियाँ सी हैं। पूर्व में फ्रांसीसी कांगो है। देश में कई छोटे-छोटे उपनिवेश या प्रान्त हैं, जैसे सेनेगल, फ़्रांसीसी गिनी, आइवरी कोस्ट, मौरीटेनिया, फ़्रांसीसी सूडान, दहोमे, नाइजर, तोगोलैण्ड, डाकर इत्यादि। इन प्रान्तों पर गवर्नर का शासन है और इनके प्रतिनिधि फ़्रांस की पार्लियामेण्ट में बैठते हैं। सारे देश का एक गवर्नर जनरल है जो फ्रांसीसी उपनिवेश मंत्री के अधीन है।

द्वितीय विश्व-युद्ध के दिनों में इस उपनिवेश ने आर्थिक प्रगति की। आइवरी कोस्ट की बन्दरगाह आबिदजान का बड़ा विकास हुआ। डाकर तो एक बड़ो भारी बन्दरगाह और हवाई अड्डा बन गया, क्योंकि डाकर अमरीका से समीपतम है, विश्वयुद्ध के दिनों में कितने ही जहाज यहाँ खड़े रहते थे, या यहाँ से आते-जाते थे। डाकर के नजदीक ही लोहे और बॉक्साइट का अथाह भण्डार है। देश का मुख्य निर्यात कोको, केले, कॉफी, मूँगफली और पाम-तेल है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

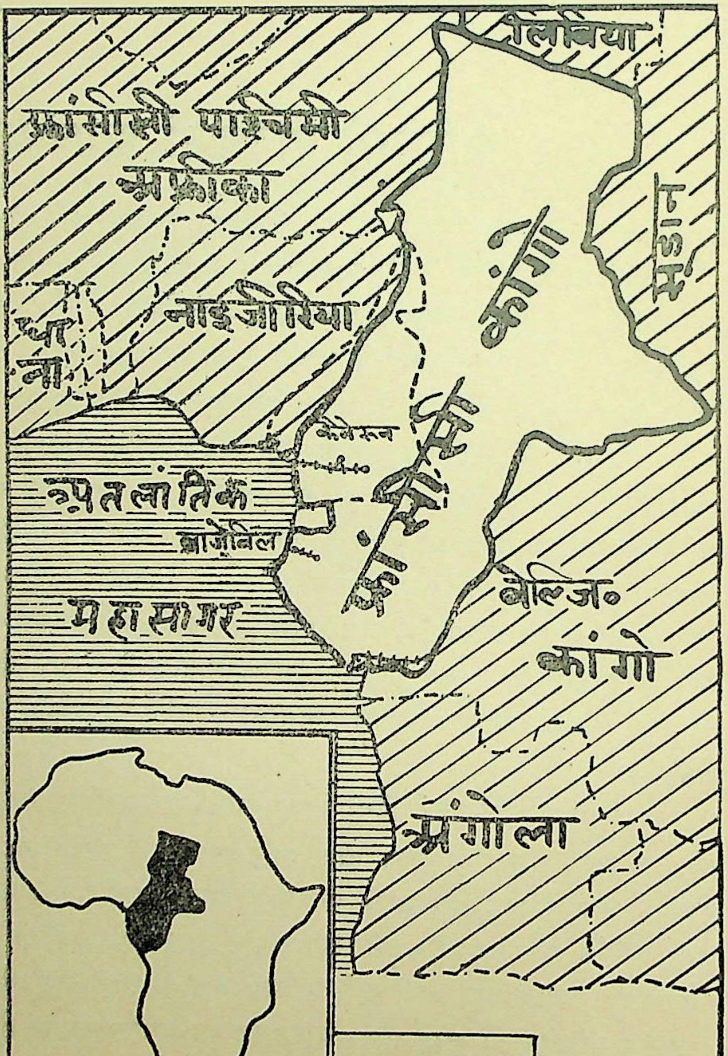

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

फ्रांसीसी कांगो

लिबिया के दक्षिण में फ्रांसीसी पश्चिमी अफ्रीका के दक्षिण-पूर्व में और मिस्र और सूडान से मिलता हुआ, फ्रांसीसी कांगो देश है। क्षेत्रफल ९५९,२५६ वर्गमील (अर्थात् फ्रांस से पाँच गुना), जन-संख्या केवल ४,०००,००० और राजधानी ब्राज़ेविल है। देश के चार प्रान्त हैं : गबुन, मध्य कांगो, उबांगी शैरी और चाड। गबुन पर तो फ्रांस ने १८४१ में कब्ज़ा किया था। परन्तु दूसरे क्षेत्रों पर आहिस्ता-आहिस्ता हाथ मारा। कैमेरुन तो १९१९ में मिला।

देश के एक-तिहाई भाग में जंगलात हैं, जहाँ की लकड़ी और रबड़ बाहर भेजी जाती है। सारे देश की फ्रांसीसी जनसंख्या अधिक नहीं है और प्रवासी फ्रांसीसी प्रायः चाड़ झील के आसपास ही रहते हैं। इसी इलाके से देश की बड़ी नदी नील और कांगो भी निकलती हैं। देश का विकास यातायात के साधनों पर निर्धारित है। अफ्रीकियों की शिक्षा पर देश की आय का केवल एक प्रतिशत भाग खर्च किया जाता है। फ़्रांसीसी लेखकों के अनुसार देश की आर्थिक स्थिति पिछड़ी हुई है। थोड़ी-सी फ्रांसीसी कम्पनियाँ हैं जिनकी मुट्ठी में देश का आर्थिक जीवन है। ये कम्पनियाँ अफ्रीकियों की उपज को सस्ते दामों पर खरीदकर मँहगे दामों पर बाहर भेजती हैं और मुनाफ़े का १५ प्रतिशत भाग सरकार के हवाले कर देती हैं। सोने की खानों में काम करने के लिए और कपास और कोको के उद्योगों के लिए मजदूर नाइजीरिया से भरती किये जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

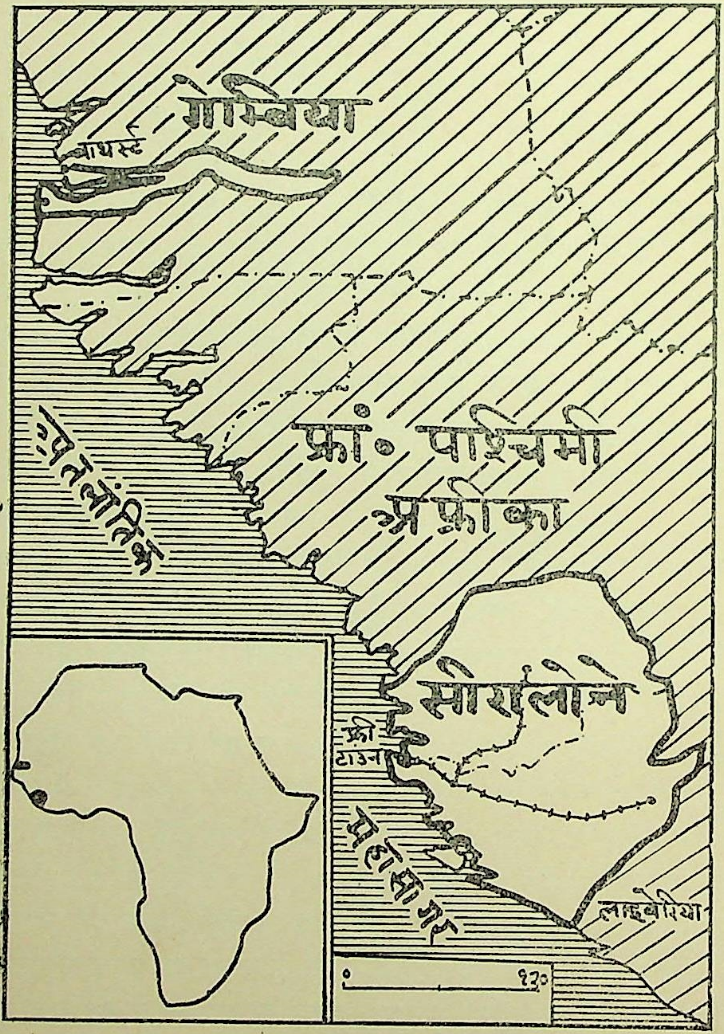

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सीरालोने और गेम्बिया

अफ्रीका के पश्चिमी तट पर ब्रिटेन की सबसे छोटी दो बस्तियाँ हैं, सीरालोने और गेम्बिया। सीरालोने में ब्रिटेन से लौटकर आने वाले अफ्रीकी बसे। क्षेत्रफल २८,००० वर्गमील, जनसंख्या १,६३४,००० और राजधानी देश की मुख्य बन्दरगाह फ्रीटाऊन है। यह पश्चिम अफ्रीका की महत्त्वपूर्ण बन्दरगाहों में है। दूसरे विश्वयुद्ध में यहाँ बड़े-बड़े जहाज आते थे। देश का फूराबे कालेज सन् १८७६ से डरहम विश्वविद्यालय के अधीन है। यहाँ पश्चिमी अफ्रीका के सारे देशों से विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं।

१६४८ के संविधान के अधीन एक ३० निर्वाचित सदस्यों की विधान सभा है। इनमें से सात तो कालोनी के प्रतिनिधि हैं, बाकी 'रक्षित' भाग के (कई अफ्रीकी देशों में तट के साथ-साथ क्षेत्र वाले भाग को कालोनी कहते हैं और आन्तरिक भाग को प्रोटैक्टोरेट)। मारम्पा स्थान पर १२० लाख टन इस्पात के अयस्क मिले हैं।

(२) गेम्बिया सीरालोने से कहीं छोटा उपनिवेश है। क्षेत्रफल ४,००० वर्गमील, जनसंख्या ३००,००० और राजधानी बार्थस्ट। उपनिवेश गेम्बिया नदी के दोनों किनारों के साथ-साथ २५० मील लम्बा और २० मील चौड़ा है। जहाँ नदी अतलान्तिक महासागर से मिलती है, वहां एक टापू बाथर्स्ट है।

नये संविधान के अधीन एक विधानसभा है और एक एग्जीक्यूटिव कौंसिल, जिसमें गैर-सरकारी अफसर प्रधान हैं। सदस्यों को मंत्री कहा जाता है। कौंसिल का सभापतित्व ब्रिटिश गवर्नर करता है। पांच सरकारी सदस्य हैं तथा १६ गैर-सरकारी, जिनमें से कुछ का निर्वाचन होता है और कुछ का नहीं। देश की आर्थिक स्थिति मूंगफली के निर्यात पर आधारित है। विश्व के दूसरे भागों में खत्म हो गए कुछ पशु-प्राणी अभी भी इस देश में मिल जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

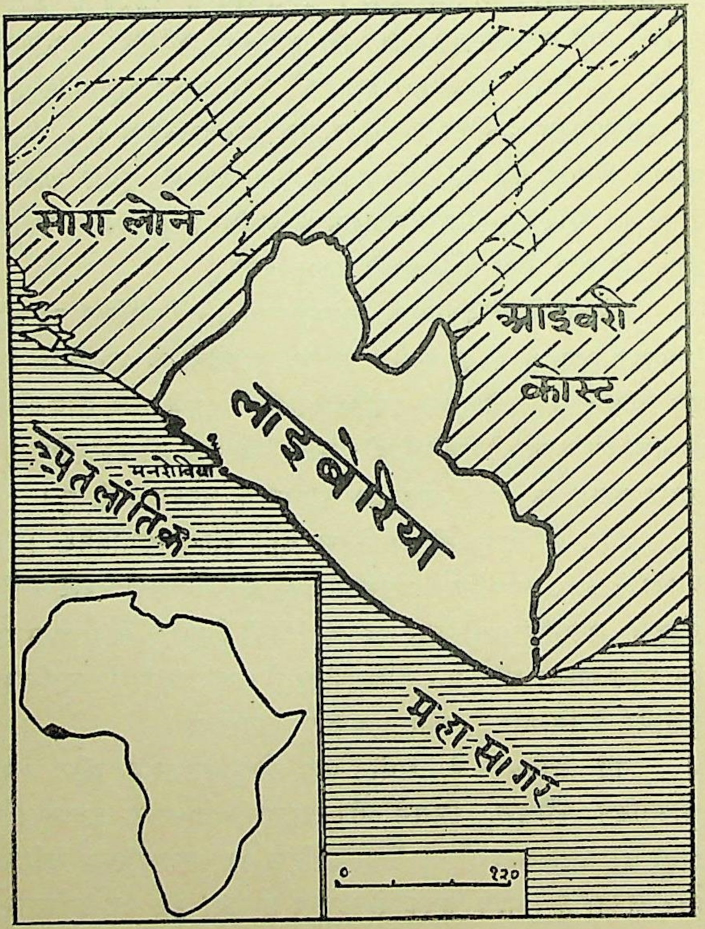

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लाइबेरिया

द्वितीय विश्वयुद्ध के आरम्भ में अफ्रीका में केवल एक ही स्वतन्त्र देश था, यह था लाइबेरिया गणराज्य। देश का क्षेत्रफल ४३,००० वर्गमील है, जनसंख्या २४,००,००० और राजधानी मनरोविया। यह देश पश्चिमी अफ्रीका में सीरालोने और आइवरी कोस्ट के बीच स्थित है। इतिहास बतलाता है कि प्रायः अफ्रीका का बन्दी व्यापार महाद्वीप के पश्चिमी तट से होता था, और लाखों ही बन्दी (आधुनिक) लाइबेरिया से अमरीका गये होंगे। १८२२ में एक अमरीकी संस्था ने ८८ बन्दियों को, जिनकी पूँजी केवल २००० रुपये के लगभग थी, 'मे फ्लावर' जहाज में चढ़ाकर अफ्रीका लौटा दिया। इसके बाद भी अमरीका से बन्दी लाइबेरिया आते रहे। गणराज्य की स्थापना १८४७ में हुई। यदि १८६१ के अमरीकी गृहयुद्ध में 'नीग्रो' लोगों को नागरिक अधिकार न मिलते तो शायद और भी बन्दी लाइबेरिया पहुँचते।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आज भी लाइबेरिया पर अमरीका का बहुत गहरा प्रभाव है। राष्ट्र-पताका अमरीकी झंडे के नमूने पर है, सरकारी भाषा अंग्रेजी है और सिक्का डालर है। लाइबेरिया अमरीका का ऋणी भी है। देश की आय का ६७ प्रतिशत भाग अमरीकी ऋण उतारने के लिए जाता है।

देश-भर में केवल ४५ मील लम्बी रेल है, जिसे अमरीकियों ने रबड़ और लोहा तट तक ढोने के लिए बनाया है। देश के निर्यात का ९० प्रतिशत भाग रबड़ है। १९२६ में अमरीकी फायरस्टोन रबड़ कम्पनी ने १० करोड़ एकड़ ज़मीन पर एकाधिकार कर लिया। बोनी हिल्ज स्थान पर लोहा निकालना आरम्भ हो गया है। अनुमान है कि यहाँ १० करोड़ टन लोहे का भंडार है। लाइबेरिया की मुख्य बन्दरगाह मनरोविया (अमरीकी प्रधान मनरो के नाम पर) का विकास भी अमरीकियों ने किया है और यहाँ एक हवाई अड्डा भी बनाया है। आज भी अमरीकी "चार सूत्रीय योजना" के अधीन लाइबेरिया को सहायता मिलती है। वास्तव में ४०,००० "अमरीका प्रभावित" लाइबेरिया निवासी देश के अन्य २,४००,००० अफ्रीकियों पर शासन करते हैं। कुछ वर्ष पहले तक लाइबेरिया के अफ्रीकी शासक, द्रव्य की आवश्यकता पड़नें पर, देश के भीतर अफ्रीकियों को बन्दी बनाकर स्पेनीय उपनिवेश फेरनांडो पो को बेचते थे।

१९३० में लीग आफ नेशन्स द्वारा स्थापित एक कमेटी ने कुछ सुधार लाइबेरिया के सामने रखे थे, परन्तु लाइबेरिया ने इन्हें ठुकरा दिया। इस पर ब्रिटेन और अमरीका ने लाइबेरिया से अपने राजनीतिक सम्बन्ध तोड़ दिये थे। लाइबेरिया पिछड़ा हुआ देश है। राजधानी मनरोविया (जनसंख्या १०,०००) में पानी, टेलीफोन, टैक्सी, बस इत्यादि का प्रबन्ध भी नहीं है। मजदूरों का वेतन पश्चिमी अफ्रीका के सब देशों से कम है। देश गरीब है, परन्तु प्रधान के पहरे पर बड़ा खर्च होता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गत ६० वर्षों से देश का शासन प्रधान की "ट्रू व्हिग पार्टी" के हाथों में है। सब सरकारी नौकर एक महीने का वेतन पार्टी को देते हैं। देश में ३००,००० वोटर हैं। एक राज्य सभा है, जिसके १० सदस्य हैं। इनकी अवधि ६ वर्ष है। एक लोकसभा है, जिसके २१ सदस्य हैं जो चार वर्ष के लिए चुने जाते हैं। शासन की बागडोर प्रधान के हाथ में है जिसका चुनाव ८ वर्ष के लिए होता है। वर्तमान प्रधान विलियम टबमैन तीन बार चुनाव में सफल हुए हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

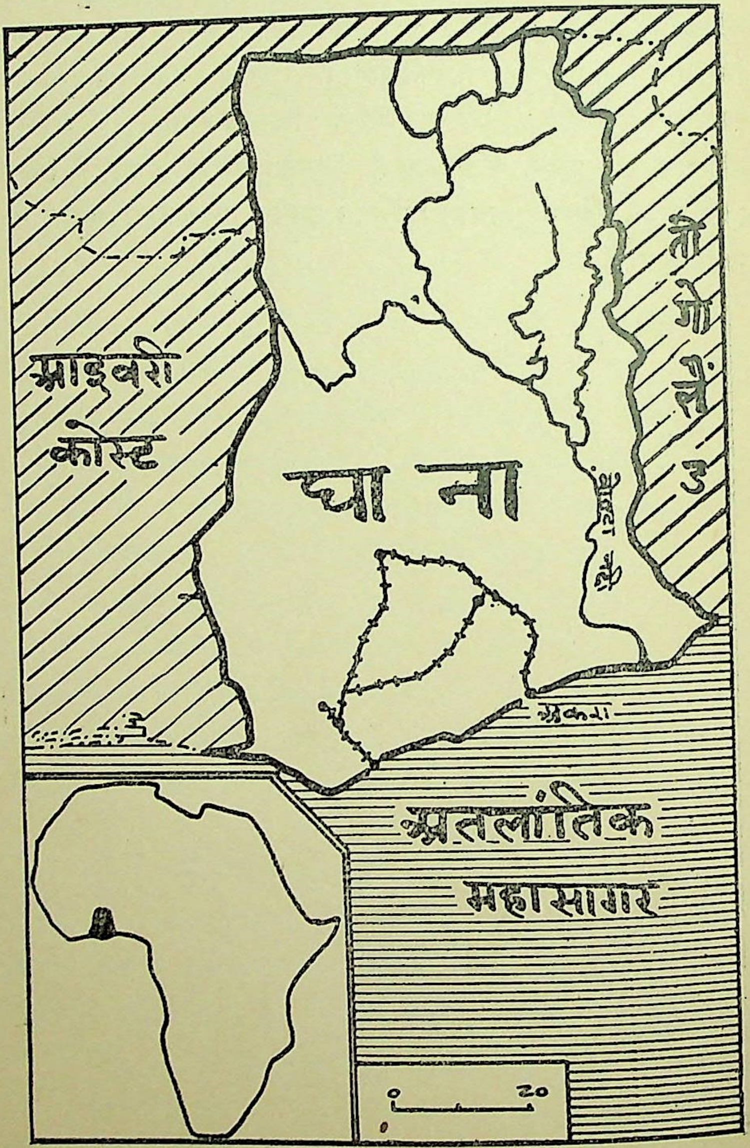

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

घाना

घाना पश्चिमी अफ्रीका में पहला देश है जिसने यूरोपीय साम्राज्यवाद के चंगुल से छुटकारा पाया है। देश ब्रिटिश राष्ट्रमंडल का पहला अफ्रीकी सदस्य है। देश का क्षेत्रफल ९१,८४६ वर्गमील है। जनसंख्या ४,४०९,००० और राजधानी अकरा है। देश के तीन भाग हैं।

(१) तट के साथ की टुकड़ी;

(२) अशन्ति, और

(३) उत्तरी भाग और तोगोलैंड, जो ब्रिटेन को १९१९ में नियोजन मैंडेट के तौर पर मिला था।

घाना का स्वतन्त्रता-संग्राम भारत के स्वतन्त्रता-संग्राम से मिलता-जुलता है। मई १९५६ में ब्रिटेन के उपनिवेश-मन्त्री ने घोषणा की थी कि यदि देश की विधान-सभा ने स्वतन्त्रता की माँग की तो उसे स्वतन्त्रता मिल जायगी। जुलाई १९५६ में देश में चुनाव हुए और ३ अगस्त, १९५६ को विधान सभा ने ७२ वोट से स्वतन्त्रता की माँग की। ६ मार्च, १९५७ का दिन स्वतन्त्रता-दिवस निश्चित हुआ। देश उस दिन स्वतन्त्र हो गया। भारत की तरह खुशी की लहर फैल गई।

गत कुछ वर्षों से घाना का आर्थिक स्तर बहुत तेजी से बढ़ रहा है। देश की सबसे बड़ी योजना वोल्टा नदी से बिजली पैदा करने की ४०० करोड़ रु० की योजना है जिसकी सहायता से एल्यूमीनियम बनाया जायगा। विश्व का सबसे अधिक कोको यहीं पैदा होता है। देश के निर्यात का मूल्य ९१ करोड़ रुपये है जिसमें से ७१ करोड़ रुपया तो केवल कोको से आता है। सोना, मेंगनीज़, बौक्साइट और हीरे भी यहाँ से बाहर भेजे जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

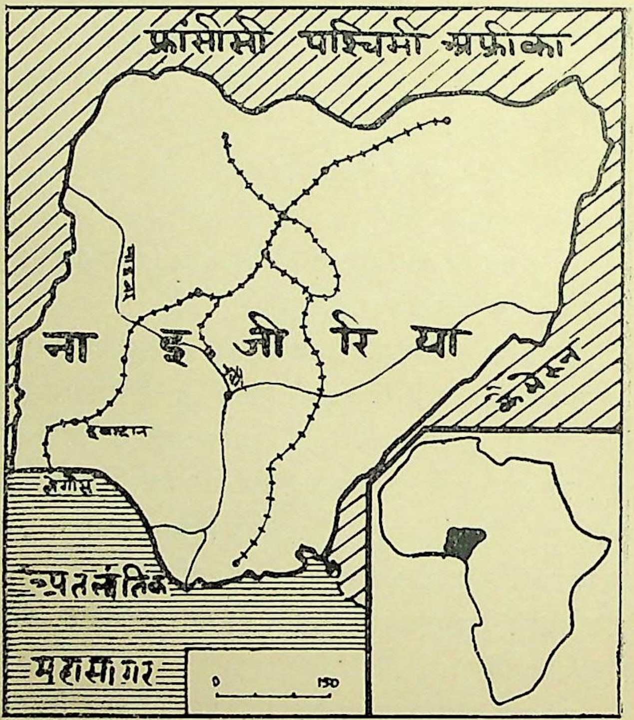

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नाइजीरिया

अफ्रीका में ब्रिटेन का सबसे बड़ा उपनिवेश नाइजीरिया है। देश का क्षेत्रफल ३७३,२५० वर्गमील, जनसंख्या ३१,८००,००० और राजधानी लेगौस है। घाना की तरह नाइजीरिया भी स्वतन्त्रता की ओर प्रगति कर रहा है। १९५४ के संविधान के अनुसार नाइजीरिया एक फैडरेशन है जिसके तीन भाग हैं—उत्तरी, पश्चिमी और पूर्वी। इन तीनों की अपनी-अपनी विधान सभाएँ हैं। उत्तरी कैमेरुन को तो उत्तरी नाइजीरिया का ही भाग समझना चाहिए। परन्तु दक्षिणी कैमेरुन फेडरल क्षेत्र है। ऐसे ही लैगोस है जो फेडरल राजधानी है। फेडरल विधानसभा के १८७ सदस्य इस प्रकार हैं : ९२ उत्तरी भाग से, ४२ पूर्वी भाग से, ४२ पश्चिमी भाग से, ६ दक्षिणी कैमेरुन से और २ लैगोस से। ये सब निर्वाचित हैं। तीन सरकारी सदस्य हैं। देश में इबादान स्थान पर एक यूनीवर्सिटी कालेज है। १००,००० किताबों का पुस्तकालय भी है। मुख्य उद्योग-धन्धा कृषि-कार्य है। कोको, काफी, कपास, चावल और तम्बाकू प्रधान फसलें हैं। ऊदी स्थान पर उत्तम कोयले की खानें मिली हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

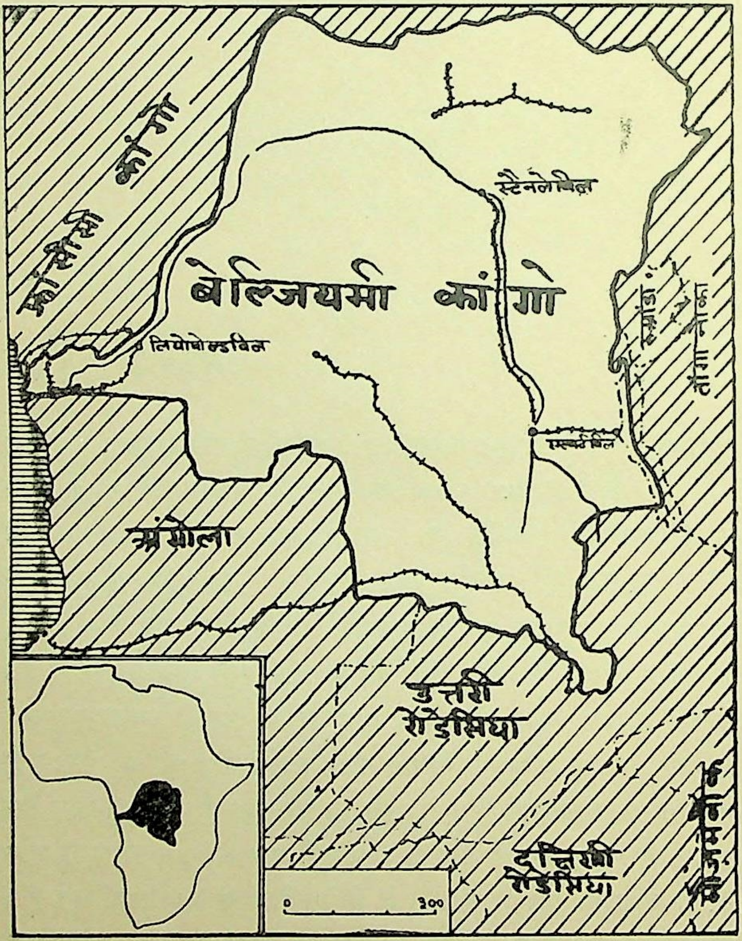

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बेल्जियमी कांगो

अफ्रीका में बेल्जियम का केवल एक ही उपनिवेश है, परन्तु यह उपनिवेश अफ्रीका महाद्वीप में सबसे अधिक उपजाऊ है। देश अतलान्तिक महासागर के तट से लेकर नील नदी के उद्गम स्थान तक फैला हुआ है। क्षेत्रफल ९१०,००० वर्गमील है जो बेल्जियम का ७७ गुना है। जनसंख्या (१४०,००,०००) भी बेल्जियम से ड्योढ़ी है। राजधानी लियोपोल्डविल है।

कांगो बेल्जियम को कैसे मिला, इसकी लम्बी कहानी है। १८७७ में एक पत्रकार स्टेनले अफ्रीका के पूर्वी तट से चलकर घने जंगलों को पार करके पश्चिमी तट तक पहुँचा। उसने देखा कि कांगो नदी के समुद्र से मिलने के २०० मील पहले तक तो नदी का पाट पथरीला है और जहाज नहीं चल सकते, परन्तु देश के १५०-२०० मील भीतर जहाजरानी हो सकती है। लगभग उसी समय एक जर्मन वैज्ञानिक ने कतांगा की तांबे की खानों का पता लगाया था।

अपने आन्तरिक झमेलों के कारण ब्रिटेन और जर्मनी कांगो पर कब्जा करने के लिए तैयार न हुए, परन्तु बेल्जियम के नरेश, लियोपोल्ड को उपनिवेशों की भूख थी। उसने स्टेनले की पूरी सहायता करने का वायदा किया और अपनी मनोकामना की पूर्ति के लिए एक अन्तर्राष्ट्रीय संघ की बुनियाद रखी। इस संघ का उद्देश्य था अफ्रीकियों का 'उद्धार' करना। स्टेनले लियोपोल्ड का एजेंट बना और एक वाष्प जहाज को टुकड़े-टुकड़े करके देश के २०० मील भीतर ले जाकर वहाँ उसे जोड़कर कांगो नदी में चलाया। नदी के दोनों ओर व्यापारी केन्द्र स्थापित किये। लगभग ६,००० वर्गमील इलाके का माल अब देश से बाहर जाने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लगा। परन्तु कांगो देश नरेश लियोपोल्ड की निजी सम्पत्ति बना, बेल्जियम ने इसका उत्तरदायित्व नहीं लिया। लियोपोल्ड के गुर्गे जनता का शोषण करते रहे। एम्सटैरडैम में बड़े-बड़े भवन उसी आमदनी से बने हैं। कुछ ही वर्ष बाद अत्याचार चरम सीमा पर पहुँच गए। अफ्रीकियों ने विद्रोह किया और लाखों अफ्रीकी मारे गए। इस पर जो हाहाकार मचा उससे सारे यूरोप में माँग हुई कि इस अत्याचार की जाँच हो। फिर बेल्जियम सरकार ने इस देश को अपने हाथ में ले लिया। इसी प्रश्न पर कई बार सरकार का तख्ता भी उल्टा।

१९३० में भी बेल्जियम सरकार सोच रही थी कि कांगो को बांतू जाति के हवाले करके चलती बने, परन्तु उसी समय कांगो के अथाह धन का पता लगा। एक प्रकार से आज कांगो सब अफ्रीकी देशों से आगे है। १९५१ में विश्व का ९६ प्रतिशत यूरेनियम, ८० प्रतिशत हीरे-जवाहरात, ७५ प्रतिशत कोबाल्ट, १० प्रतिशत वंग, ७ प्रतिशत सोना, ३० प्रतिशत पाम तेल, ३३ प्रतिशत तांबा यहीं मिलता था।

वार्षिक निर्यात की दर है—२०० करोड़ रुपया। इसके अतिरिक्त विश्व की २० प्रतिशत बिजली इस देश में पैदा हो सकती है।

कांगो के आर्थिक जीवन पर पाँच कम्पनियों का आधिपत्य है। इन कम्पनियों के मुनाफे में बेल्जियम सरकार का अधिक भाग है। १९५० में केवल एक कम्पनी ने २६ करोड़ रुपये का मुनाफा दिखलाया था। देश के ४८ प्रतिशत भाग में जंगल हैं और देश की ८५ प्रतिशत जनसंख्या जंगलों में रहती है। एक तिहाई जमीन पर, और देश की आधी मजदूर जनता पर, इनका एकाधिकार है। बेल्जियमी शासक अफ्रीकी 'सरदारों' से मज़दूर भरती करवाते हैं। दूसरे उपनिवेशों की अपेक्षा कांगो के अफ्रीकी परिवार समेत नगरों में बस सकते हैं। आज 'लियो' (लियोपोल्डविल) में २२०,०००

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अफ्रीकी रहते हैं। तीन वर्षों में कांगो के अफ्रीकियों ने ४ करोड़ रुपये बचाकर बैंकों में जमा कर रखा है। इससे स्पष्ट है कि अफ्रीकी प्रोलीटैरियट पैदा हो रही है।

दूसरे उपनिवेशों की तरह यहाँ भी अफ्रीकियों पर रंगभेद के प्रतिबन्ध हैं। शिक्षा के क्षेत्र में उनका वही हाल है जो पड़ोसी अफ्रीकियों का। कांगो के अफ्रीकियों को यूरोप में शिक्षा के लिए जाने की आज्ञा नहीं मिलती। १९५४ में एक विश्वविद्यालय खोला गया। गोरे लोगों के लिए तो आलीशान भवन हैं, परन्तु अफ्रीकियों के लिए छोटी-छोटी झोंपड़ियाँ। अन्तर यह है कि कांगो के अफ्री-कियों को यन्त्रादि मशीनरी चलाना आता है। आज हजारों अफ्रीकी मिस्त्री कांगों में काम करते हैं, हालांकि जिस काम के लिए एक बेल्जियमी को १०० रुपये वेतन मिलता है उसी काम के लिए एक अफ्रीकी को १० रुपया। परन्तु फिर भी कांगो के अफ्रीकी आर्थिक क्षेत्र में दूसरे अफ्रीकियों से थोड़ा आगे बढ़े हुए हैं।

दूसरी ओर कांगो के किसी भी निवासी को वोट का अधिकार नहीं है। राजनीतिक आन्दोलन पर कड़ी देखभाल है। राजनीतिक कार्यकर्ताओं को तुरन्त देश से बाहर भेज दिया जाता है। १९५१ में ३००० व्यक्तियों को देश से बाहर भेज दिया गया। अभी थोड़े ही दिन हुए, संयुक्त राष्ट्र ने कांगो सरकार की अलोक-तंत्रीय नीति की कटु आलोचना की थी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

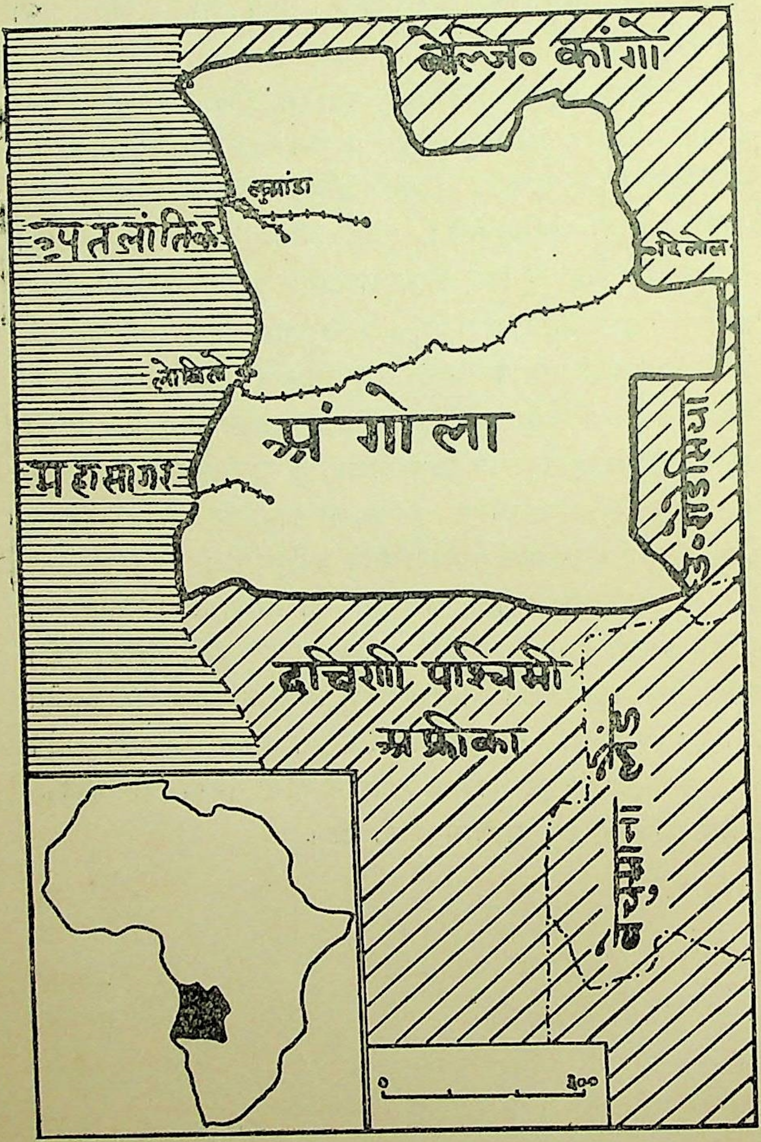

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अंगोला

अफ्रीका के पश्चिमी तट पर बसा एक पुर्तगाली उपनिवेश 'अंगोला' है। क्षेत्रफल ४८८,००० वर्गमील, पुर्तगाल का १३ गुना है, परन्तु जनसंख्या, ४,६००,०००, जो पुर्तगाल से आधी ही है। जैसे पश्चिमी तट पर अंगोला पुर्तगाली उपनिवेश है वैसे ही पूर्वी तट पर मौज़मबीक भी पुर्तगाली उपनिवेश है। दोनों का क्षेत्रफल सारे यूरोप से आधा है। परन्तु जनसंख्या पुर्तगाल के बराबर है। अंगोला में ७९,००० यूरोपीय शासन करते हैं।

पोप अलैक्जाण्डर के फतवे के अधीन, केप वर्डी द्वीप-समूह से ३७० मील पश्चिम की ओर एक काल्पनिक सीमा निर्धारित की गई। इसके पश्चिम में बसे सारे देश (जैसे अमरीका महाद्वीप) स्पेन को मिले, और पूर्व की ओर सब देश पुर्तगाल को। अंगोला देश का सम्बन्ध पुर्तगाल से १४९१ ई० में स्थापित हुआ। १६४८ में पुर्तगाल ने इस पर कब्जा किया। उत्तर में बेल्जियमी कांगो है और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दक्षिण में दक्षिण-पश्चिमी अफ्रीका है। तट पर लोबितो बन्दरगाह है, जिसे एक ब्रिटिश कम्पनी की रेलवे कांगो की सीमा से जा मिलाती है। थोड़े ही वर्ष हुए, अमरीकियों ने भी लोबितो का विकास किया और कांगो के पश्चिमी सीमा के समीप वीले लूसो स्थान पर एक हवाई अड्डा भी स्थापित किया। देश में अमरीकी प्रभाव बढ़ता जा रहा है। हीरे-जवाहरात की खानों पर जिस कम्पनी का एकाधिकार है उस पर अमरीकियों का प्रभुत्व है। देश के ५/६ भाग में हीरे खोज करने का एकाधिकार इसी कम्पनी का है। लुण्डा प्रान्त की जनता को मजदूर बनाने का भी अधिकार है। पादरी डाक्टरों को तो दवाइयों के आयात पर भी कर देना पड़ता है, परन्तु इस कम्पनी के माल और मशीनरी के आयात पर कोई कर नहीं है। यह कम्पनी अपने मुनाफे में से सवा करोड़ रुपये पुर्तगाली सरकार को देती है। तट के साथ-साथ औद्योगिक धन्धे भी हैं, परन्तु देश पिछड़ा हुआ है। पुर्तगाली स्वयं प्रगतिशील नहीं हैं और इस देश के विकास के लिए भी कुछ नहीं करते। वास्तव में उनके साम्राज्य की नींव बर्बरता पर है। आज भी बलात् पकड़े गए बन्दियों से काम लिया जाता है। जो भी थोड़ी-बहुत सड़कें बनी हैं वे ऐसे ही मजदूरों द्वारा बनाई गई हैं। एक ब्रिटिश लेखक बैज़िल डैविडसन के अनुसार १९५४ में ३७९,००० अफ्रीकी बन्दी थे, जिनसे काम तो लिया जाता था, परन्तु न तो इनको वेतन मिलता था, न भोजन। इनके अतिरिक्त ४,००,००० दूसरे मज़दूर और भी थे। बहुत-से मजदूर तो साओथाम भेज दिये जाते हैं, जहाँ से वे जीवन-भर वापस नहीं लौटते। अफ्रीकी इतने डरे हुए हैं कि रेलवे लाइन के दोनों ओर लोग नज़र ही नहीं आते—मिल जायँ तो उन्हें पकड़कर ले जाया जाता है। साओथोम तो दण्डियों के लिए ही है। यहाँ प्रायः राजनीतिक आन्दोलन करने वाले कार्यकर्ताओं को भेजा जाता है। राजनीतिक आन्दोलन पर कड़ा प्रतिबन्ध है। एक कारण तो यह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भी है कि कितनी ही बार इस देश में विद्रोह हो चुका है; एक विद्रोह १६०२ में हुआ था, एक १६३६ में हुआ। १६५३ में भी एक विद्रोह हुआ, परन्तु पुर्तगाली अफ़सर समाचारों को बाहर नहीं जाने देते।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

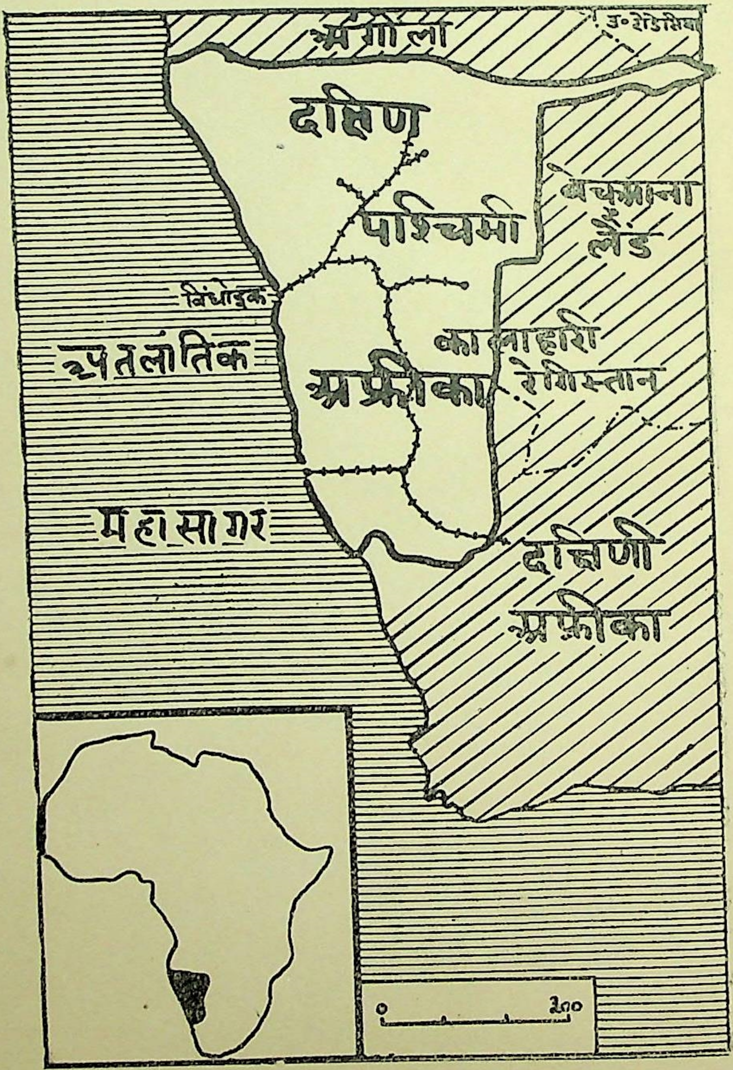

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दक्षिण-पश्चिमी अफ्रीका

अंगोला के दक्षिण और दक्षिणी अफ्रीका के उत्तर में दक्षिण-पश्चिमी अफ्रीका है। १९१९ तक यह जर्मनी का उपनिवेश था। अब उसे दक्षिणी अफ्रीका ने हड़प कर लिया है। क्षेत्रफल ३१७,७२५ वर्गमील, राजधानी विंधोइक और जनसंख्या केवल ३५२,०७५ जिसमें से ४०,००० यूरोपीय हैं जिनका २५ प्रतिशत भाग जर्मन लोग हैं। पश्चिमी तट से ६० मील दूर एक पर्वतमाला है। दोनों के बीच रेगिस्तान है। पर्वतमाला के पार विशाल रेगिस्तान है जिसे कालाहारी कहते हैं।

पड़ोसी देशों की तरह, दक्षिण-पश्चिमी अफ्रीका में धातुओं का भंडार है। हीरे, वेनेडियम, वंग, कराइकुल, पेल्ट निर्यात होते हैं। देश में हैरैरो जाति के बहुत सारे लोग रहते हैं। इन लोगों ने देश को दक्षिणी अफ्रीका द्वारा हड़प करने का कड़ा विरोध किया है, और संयुक्त राष्ट्र को अपीलें भी भेजी हैं। संयुक्त राष्ट्र ने दक्षिणी अफ्रीका को आदेश भी दिया है कि दक्षिण-पश्चिमी अफ्रीका को अन्तर्राष्ट्रीय ट्रस्टीशिप के हवाले कर दे, परन्तु दक्षिणी अफ्रीका का संयुक्त राष्ट्र की ओर रवैया वही है जो उसका प्रवासी भारतीयों के बारे में है, अर्थात् संयुक्तराष्ट्र के आदेशों की अवहेलना।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

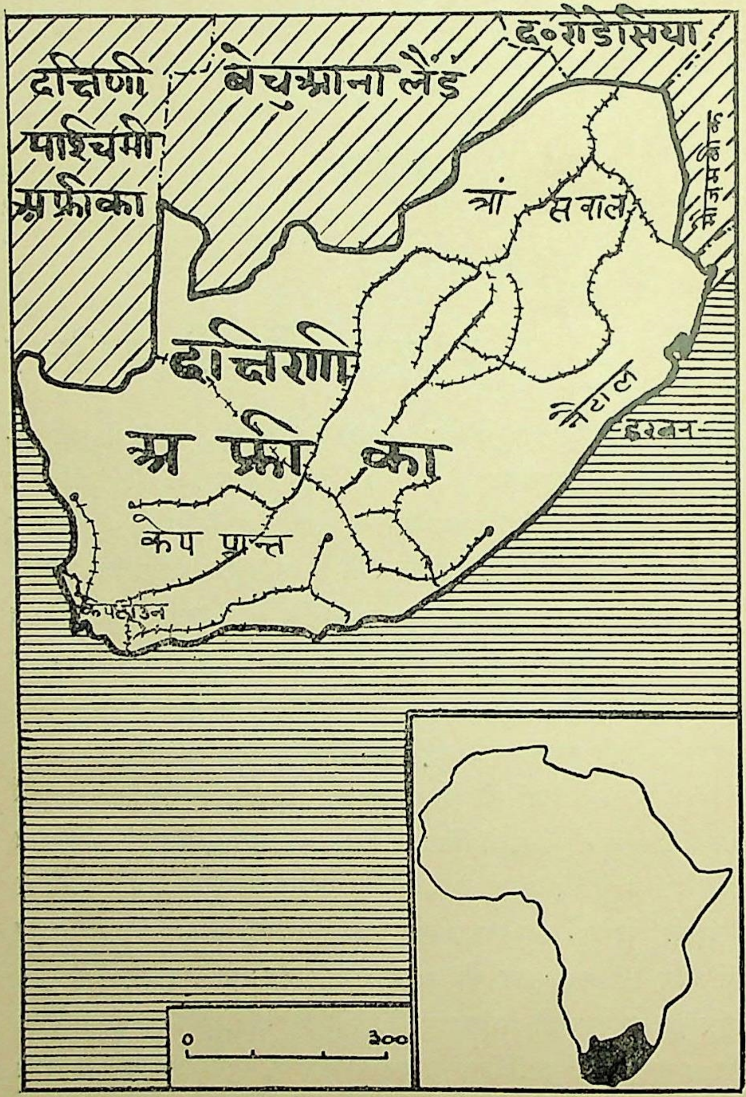

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दक्षिणी अफ्रीका

सन् १९०२ में ब्रिटेन ने ट्रांसवाल और औरंज फ्री स्टेट पर विजय प्राप्त की थी और आठ वर्ष बाद इन दोनों को केप कॉलोनी और नैटाल से मिलाकर दक्षिणी अफ्रीकी यूनियन बनाई। चारों देश चार प्रान्त बन गए। समस्त देश का क्षेत्रफल ४७२,४८९ वर्गमील है और जनसंख्या १,३९,१५,००० जिसमें से २९,०७,००० यूरोपीय हैं, ४१२,००० भारतीय और दूसरे एशियाई हैं और बाकी अफ्रीकी हैं। भारतीय प्रायः नैटाल में रहते हैं। १८६० में अंग्रेज भारतीयों को भरती कर नैटाल ले गए थे (नैटाल सरकार प्रतिवर्ष डेढ़ लाख रुपया भारतीयों को नैटाल लाने के लिए खर्च करती थी)। ये भारतीय जब एक बार देश से दक्षिणी अफ्रीका पहुँचे तो वहीं बस गए। आज प्रवासी भारतीयों का भारत से केवल आध्यात्मिक सम्बन्ध है। अब तो भारत में उनके कोई सम्बन्धी भी नहीं हैं। जब देश की आर्थिक उन्नति हो गई तब, १८९१ में, कुछ यूरोपीयों ने आन्दोलन किया कि अब भारतीयों को वापस भारत भेजा जाय। इसी ध्येय-पूर्ति के लिए भारतीयों और अफ्रीकियों के वोट के अधिकार भी छीन लिये गए हैं और भिन्न-भिन्न जातियों के रहने के लिए भिन्न-भिन्न क्षेत्र निर्धारित कर दिये गए हैं। संयुक्त राष्ट्र ने दक्षिणी अफ्रीकी भारतीयों के विरुद्ध रंगभेद की नीति की निन्दा की है, परन्तु दक्षिणी अफ्रीका संयुक्त राष्ट्र के आदेशों की अवहेलना करता है। यही नहीं, गत छः-सात वर्षों में रंगभेद के कानून और भी कड़े कर दिये हैं। दक्षिणी अफ्रीका और नाज़ी नीति में अब कोई विशेष अन्तर नहीं रह गया है। दक्षिणी अफ्रीका में उसी प्रकार की तानाशाही है। शासक धन बटोरना चाहते हैं। देश में हीरा और सोना इत्यादि किस मात्रा में मिलता है इसका अन्दाजा इस बात से हो सकता है कि एक वर्ष (१९४६) में १६२ करोड़ रुपये का माल दक्षिणी अफ्रीकी भूमि से निकालकर बाहर भेजा गया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

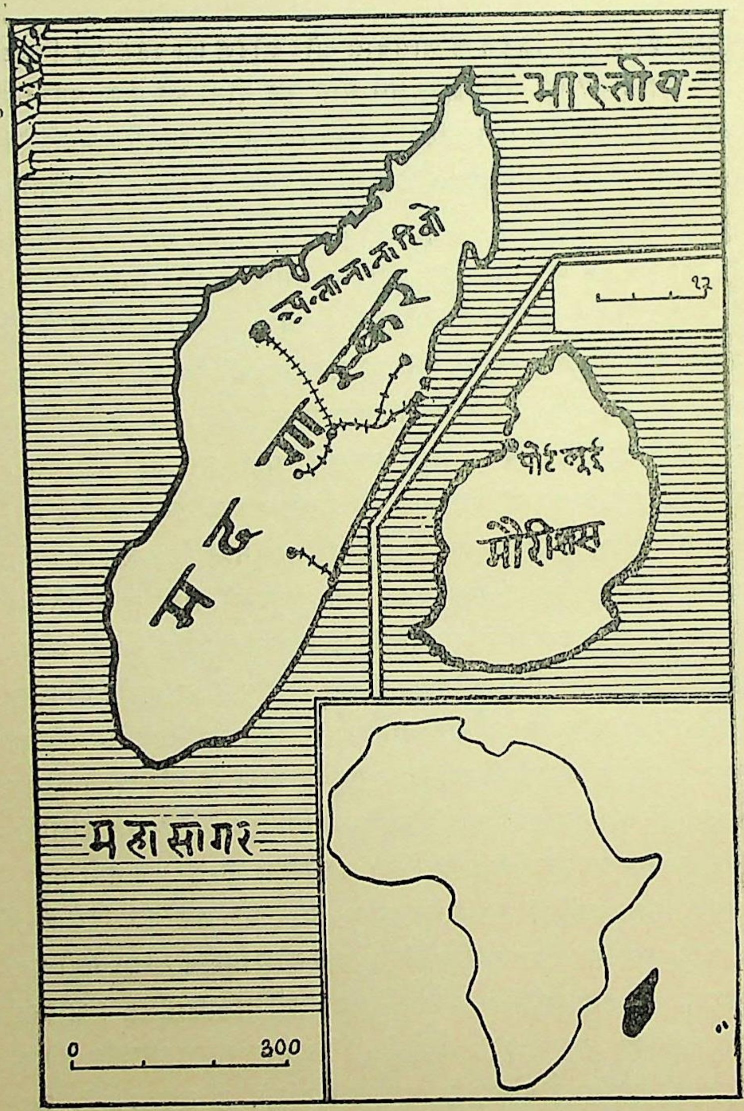

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मदगास्कर और मौरीशस

मदगास्कर, अफ्रीका के दक्षिण-पूर्वी तट के समीप, एक टापू है, जो विश्व के बड़े टापुओं में से पाँचवाँ है। इसका क्षेत्रफल २२८,००० वर्गमील, जनसंख्या ४,०००,००० और राजधानी अन्तानानारिवो। इस टापू पर सन् १८९० में फ्रांसीसी सेनाएँ उतरीं। सन् १८९६ में उन्होंने मदगास्कर की होवा जाति की रानी को, जो १८८३ से राज कर रही थी, गद्दी से उतारकर अलजीरिया भेज दिया। कई बार विद्रोह हो चुका है।

टापू की स्थिति महत्त्वपूर्ण है। द्वितीय विश्वयुद्ध में, जब जहाज़ों को केप का चक्कर लगाकर आना पड़ा, ब्रिटेन ने इस टापू के समुद्री अड्डे दियागो सौरेज़ पर कब्जा कर लिया। युद्ध के बाद टापू फ्रांस को वापस कर दिया गया। १९४७ में होवा जाति ने फिर विद्रोह किया, और फ्रांसीसी सेना ने इसे ज़ोर से दबाया। त्राहि-त्राहि मच गई थी।

टापू से सोना, पशु और रबड़ इत्यादि बाहर भेजे जाते हैं।

(२) मदगास्कर के ५५० मील पूर्व में एक दूसरा बड़ा टापू, मौरीशस, है। इसका क्षेत्रफल ८०५ वर्गमील है, जनसंख्या ४३८,७०३ और राजधानी पोर्ट लूई है। देश में ४२५,७७७ प्रवासी भारतीय हैं। उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भ से यह टापू ब्रिटेन के कब्ज़े में है। रबड़ और गन्ना खूब होता है। टापू के बीच ११६ मील लम्बी रेलवे लाइन है, जो गन्ने से बनी चीनी को टापू की राजधानी और मुख्य बन्दरगाह तक पहुँचाती है। मौरीशस का शासन एक ब्रिटिश गवर्नर करता है। इसी गवर्नर के अधीन पास के दूसरे छोटे-छोटे टापू (जैसे ४२ वर्गमील का राड्रीगस) भी हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

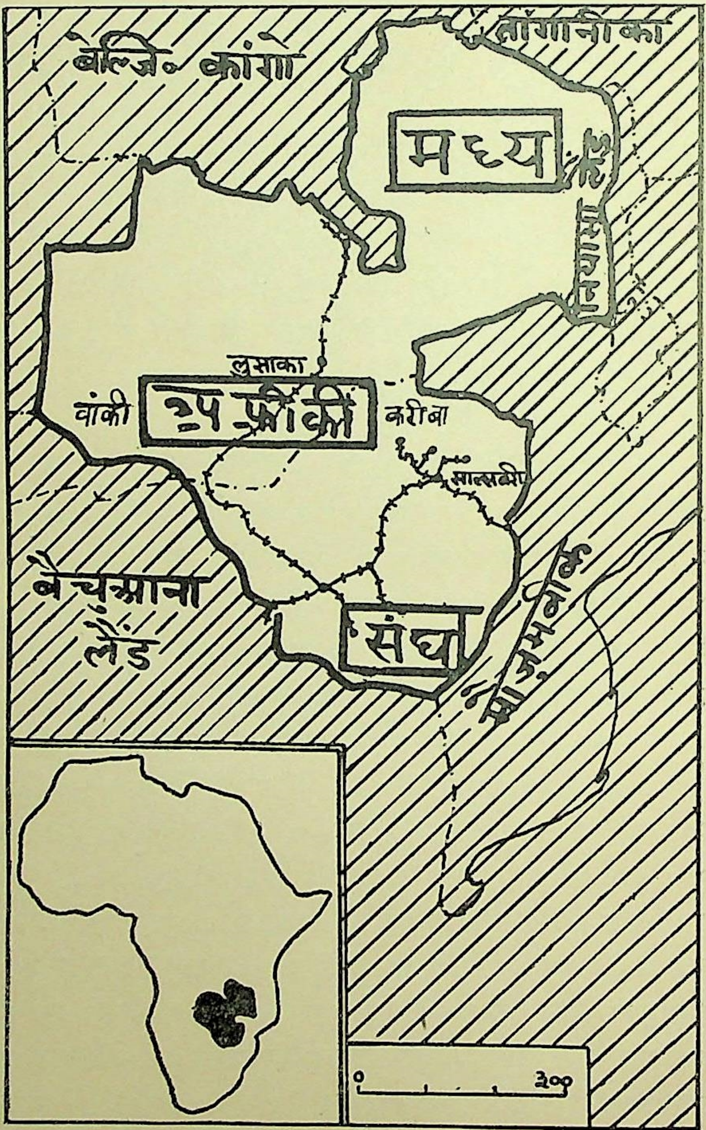

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मध्य अफ्रीकी संघ

मोज़मबीक, कांगो, दक्षिणी अफ्रीका और तांगानीका के बीच बसे मध्य अफ्रीकी संघ (क्षेत्रफल ४७२,४४६ वर्गमील) के तीन भाग हैं: उतरी रोडेसिया, दक्षिणी रोडेसिया और नियासालैण्ड। अक्तूबर १९५३ में इन तीनों देशों को मिलाकर ब्रिटेन ने मध्य-अफ्रीकी संघ की बुनियाद रखी थी, ताकि २००,००० यूरोपीय (जो देश की जनसंख्या का तीन प्रतिशत भाग हैं) ६,४५०,००० अफ्रीकियों पर राज्य कर सकें। रोडेसिया को ब्रिटेन ने १९२३-२४ में साउथ अफ्रीका चार्टर्ड कम्पनी से लिया था। फिर नियासालैण्ड के सरदारों को फुसलाकर उनके देश को भी हथिया लिया। इनसे वायदा किया गया कि नागरिकों की इच्छा के बग़ैर उन्हें किसी दूसरे के हवाले नहीं किया जायगा। उत्तरी रोडेसिया को आर्थिक दृष्टि से इतना कमज़ोर समझा गया था कि उसकी ओर विशेष ध्यान ही नहीं गया। जब कांगो के कतांगा प्रान्त के नज़दीक अथाह तांबे के भण्डार का पता लगा, तब दक्षिणी रोडेसिया के यूरोपीयों के मुँह में पानी आ गया। तांबे की खानों के लिए कोयला दक्षिणी रोडेसिया के वांकी स्थान की खानों से आता है। दक्षिणी रोडेसिया में बसने वाले यूरोपीय (जो यहाँ प्रायः दक्षिणी अफ्रीका से आकर बसे) संख्या में उत्तर रोडेसिया के यूरोपीयों से तिगुनें हैं। इन्होंने आवाज़ उठाई कि उत्तरी रोडेसिया और नियासालैण्ड के रक्षित इलाके उनके हवाले कर दिये जायँ। अन्त में ऐसा ही हुआ। गत दस वर्षों में यूरोपीयों की जनसंख्या दुगनी हो गई है।

औद्योगिक धन्धों में संघ, विशेषतया दक्षिणी रोडेसिया, बड़ी प्रगति कर रहा है। लूसाका और बुलवायो का बड़ा विकास हुआ है। एक योजना बनी है जिसके अधीन करीबा स्थान पर ज़ैमबीज़ी नदी से बिजली तैयार की जायगी। इस बिजली से कारखाने चलेंगे। नियासालैण्ड खाद्य पदार्थ और मजदूर देगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

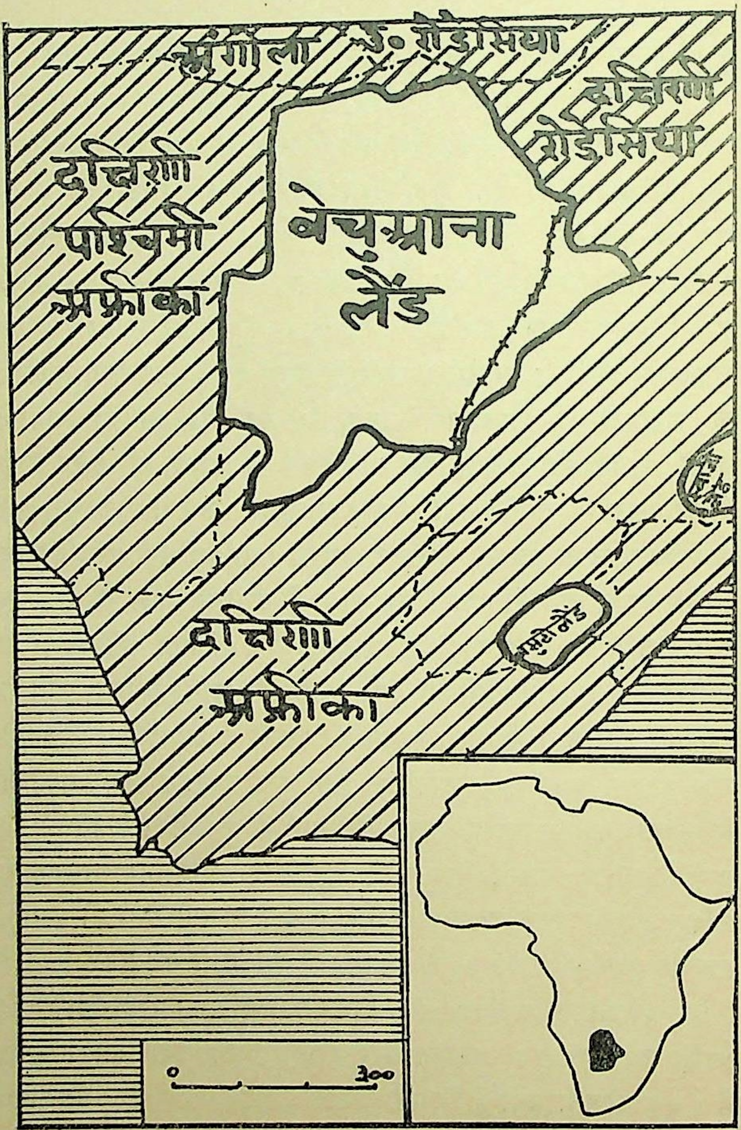

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दक्षिणी अफ्रीका में 'रक्षित क्षेत्र'

दक्षिणी अफ्रीका की सीमा के अन्दर, या उसके निकट, ब्रिटेन के तीन रक्षित क्षेत्र हैं। जब १९१० में दक्षिणी अफ्रीकी यूनियन बनी, तब इन क्षेत्रों को ब्रिटेन ने, उनके नागरिकों की इच्छानुसार, अलग रख छोड़ा था। बसुटोलैण्ड और स्वाज़ीलैंड (क्षेत्रफल ११,७१६ और ६,७०५ वर्गमील, जनसंख्या ६,००,००० और २००,०००) तो मानो दक्षिणी अफ्रीका के 'पेट' में थैलियाँ हैं। ब्रिटिश वेचुआनालैंड (जो दक्षिण अफ्रीका के वेचुआनालैंड प्रान्त से भिन्न है) दूसरे दोनों 'रक्षित' क्षेत्रों से बड़ा है (क्षेत्रफल २७५,००० वर्गमील और जनसंख्या २५०,०००)। तीनों क्षेत्रों की आर्थिक स्थिति पिछड़ी हुई है। ब्रिटेन ने इनके विकास के लिए कुछ भी नहीं किया, शायद इसलिए कि दक्षिणी अफ्रीका बहुत दिनों से माँग कर रहा है कि ये क्षेत्र (जिनका क्षेत्रफल दक्षिणी अफ्रीका का दो-तिहाई है) दक्षिणी अफ्रीका को मिलने चाहिएँ। इनके आर्थिक सम्बन्ध तो अभी भी दक्षिणी अफ्रीका के साथ ही हैं जो गेहूँ और ऊन बसुटोलैण्ड से खरीदता है, घी-मक्खन स्वाज़ीलैण्ड से, और पशु वेचुआनालैण्ड से। इन तीनों देशों की राजनीतिक क्षेत्र में बिलकुल प्रगति नहीं हुई। रंगभेद कानून इतने कड़े तो नहीं हैं जितने दक्षिणी अफ्रीका में, परन्तु सेरित्सेखामा काण्ड से पता चलता है कि शासन का आधार रंगभेद पर ही है। स्वाज़ीलैण्ड के आधे भाग को तो यूरोपीयों ने हथिया लिया है, वेचुआनालैण्ड में कई 'रिज़र्व' हैं जहाँ केवल अफ्रीकी ही रहते हैं। बाकी क्षेत्रों में यूरोपीय रहते हैं। कालाहारी रेगिस्तान है जहाँ संयुक्त-राष्ट्र के एक विभाग ने खोज की है। एक योजना के अधीन यहाँ गहराई से पानी निकालकर उद्यानों की सिंचाई होगी और पशु पालने के 'रेंच' स्थापित किये जायँगे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

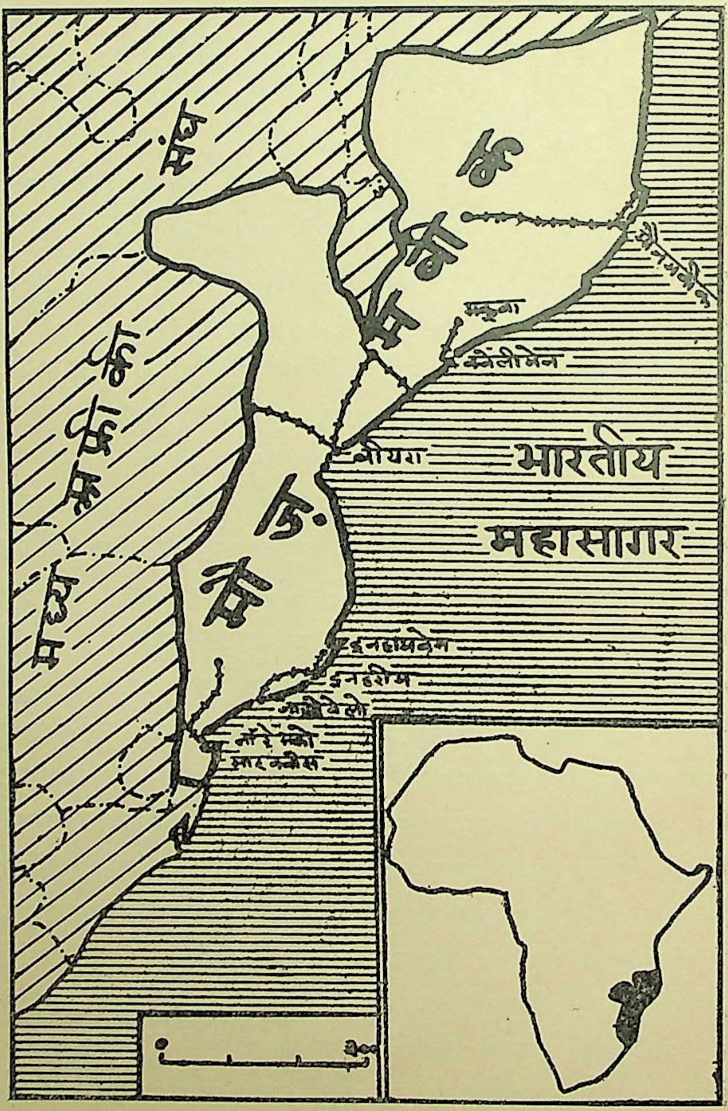

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मौज़मबीक

मौज़मबीक पूर्वी अफ्रीका में पुर्तगाली उपनिवेश है। इसका क्षेत्रफल २९७,६५७ वर्गमील (पुर्तगाल के क्षेत्रफल से नौ गुना है) जनसंख्या ५६,५०,००० और राजधानी लारेंको मारक्वीस। यह भारतीय महासागर के साथ-साथ १५०० मील लम्बे तट पर बसा है। ज़ैमबीज़ी नदी देश के बीच से गुज़रती है। ज़ैमबीज़ी प्रान्त की भूमि बहुत उपजाऊ है। पूर्वी तट पर मौज़मबीक का हाल वही है जो पश्चिमी तट पर अंगोला का है। जैसे अंगोला कांगों के लिए निर्यात-द्वार है, वैसे ही मौज़मबीक में त्रांसवाल और रोडेसिया से रेलें आकर मिलती हैं। बलात् पकड़े गए अफ्रीकी मज़दूर दक्षिणी अफ्रीका और मध्य अफ्रीकी संघ को भेजे जाते हैं। सन् १९०७ की सन्धि के अधीन त्रांसवाल की खानों में काम करने के लिए मज़दूर भी मौज़मबीक में भरती किये जाते हैं।

एक यूरोपीय सुझाव यह है कि अंगोला की बन्दरगाह लोबीतो को पूर्वी तट पर बीयरा से रेल द्वारा मिला दिया जाय, ताकि वे एक तट से दूसरे तक रेल द्वारा जा सकें और देश के शोषण में सहायता मिले। साम्राज्यवादी देशों में पुर्तगाल सबसे पिछड़ा हुआ देश है। मौज़मबीक के ५०,००० यूरोपीय, ५,६००,००० अफ्रीकियों पर वैसे ही अत्याचार करते हैं जैसे अंगोला में।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

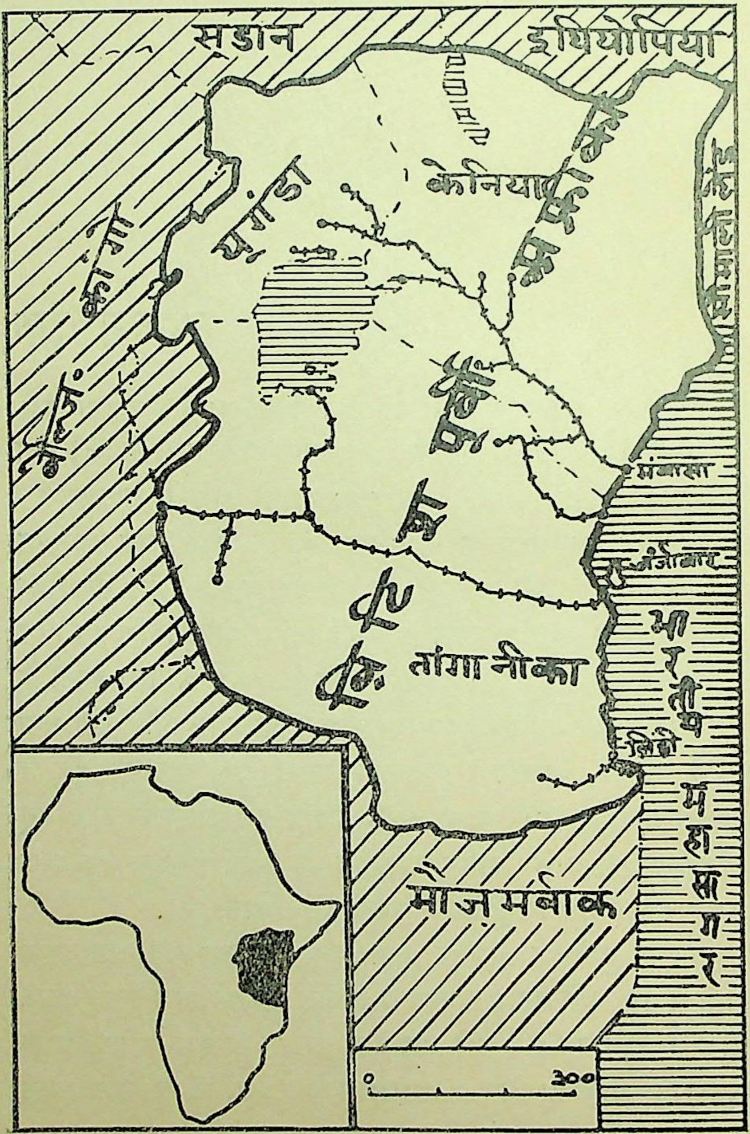

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ब्रिटिश पूर्वी अफ्रीका

ब्रिटिश पूर्वी अफ्रीका का आशय तीन उपनिवेशों से है—केनिया, यूगंडा और तांगानीका । यूगंडा तो 'रक्षित' उपनिवेश है, और तांगानीका संयुक्त राष्ट्र का ट्रस्ट क्षेत्र है ।

उन्नीसवीं शताब्दी में ब्रिटिश पूर्वी अफ्रीका का अधिक भाग जंजीबार के सुल्तान के अधीन था । आज सुल्तान के पास केवल जंजीबार और पेम्बा द्वीप ही हैं, बाकी भागों पर यूरोपीय देशों ने कब्जा कर लिया है । जब जर्मनी ने तांगानीका पर अधिकार कर लिया तब एक ब्रिटिश कम्पनी ने केनिया के तट के साथ एक लम्बी टुकड़ी को ठेके पर ले लिया (आज भी ब्रिटेन प्रतिवर्ष सुल्तान को सवा लाख रुपये देता है) । फिर ब्रिटिश कम्पनी ने अपना हाथ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बढ़ाया और यूगंडा को 'रक्षित' क्षेत्र घोषित कर दिया। धीरे-धीरे १८९० तक ब्रिटेन ने अपना राज्य यूगंडा के दूसरे क्षेत्रों पर थोपा। ब्रिटेन के आधिपत्य का आकार वही है जो भारतीय रियासतों का हुआ करता था। ब्रिटेन ने अफ्रीका के पूर्वी तट से यूगंडा की राजधानी एंटिब्बी तक एक रेलवे बनाई। इसके बनाने के लिए भारतीयों को भरती किया गया। आज केनिया दूसरे दो उपनिवेशों से आगे है। इसीलिए ब्रिटेन उसे यूगंडा और तांगानीका का नेता समझता है। १९४८ में ब्रिटेन ने एक पूर्वी अफ्रीकी कमीशन की स्थापना की थी। इस कमीशन के सदस्य तीनों उपनिवेशों के गवर्नर हैं। केनिया का गवर्नर उनमें मुख्य है। यूगंडा के एक प्रान्त बुगण्डा की राजधानी कम्पाला में मकेरेरे कालेज है जहाँ तीनों उपनिवेशों के विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करते हैं। केनिया का वार्षिक निर्यात दूसरे दोनों उपनिवेशों से अधिक है। केनिया का निर्यात ४० करोड़ रुपये है जबकि तांगानीका का केवल २७ करोड़ रुपये। गत दस वर्षों में आर्थिक क्षेत्र में प्रगति हुई है। कितने ही अफ्रीकी लोग शहरों में आकर बस गए हैं।

अगले तीन अध्यायों में हम देखेंगे कि इन तीन उपनिवेशों की समस्याएँ भिन्न हैं। परन्तु इनका सिक्का, डाकटिकट और रेलवे शासन संयुक्त हैं। इन तीनों उपनिवेशों के १८,०००,००० अफ्रीकी नागरिकों को भय है कि कहीं इनका भी हाल वही न हो जो मध्य अफ्रीकी संघ के अफ्रीकी नागरिकों का हुआ है (जहाँ जन संख्या का ३ प्रतिशत भाग बाकी ९७ प्रतिशत पर रंगभेद कानून थोपता है)। केनिया में रंगभेद का प्रश्न इतना ही जटिल है जितना दक्षिणी रोडेसिया में। यूगंडा आज उसी प्रकार 'रक्षित' क्षेत्र है जैसे नियासालैण्ड। यदि ब्रिटेन तीनों उपनिवेशों को मिला-कर एक पूर्वी अफ्रीकी संघ बना दे, तो अफ्रीकियों के साथ वही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

व्यवहार होगा जो मध्य अफ्रीकी संघ या दक्षिण अफ्रीका में हो रहा है—(अपने घर में ही अपमानित और अजनबी)। यहाँ के रंगभेद नीति के कानून संयुक्त राष्ट्र द्वारा निर्धारित मानव-जाति के अधिकारों के विरुद्ध हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

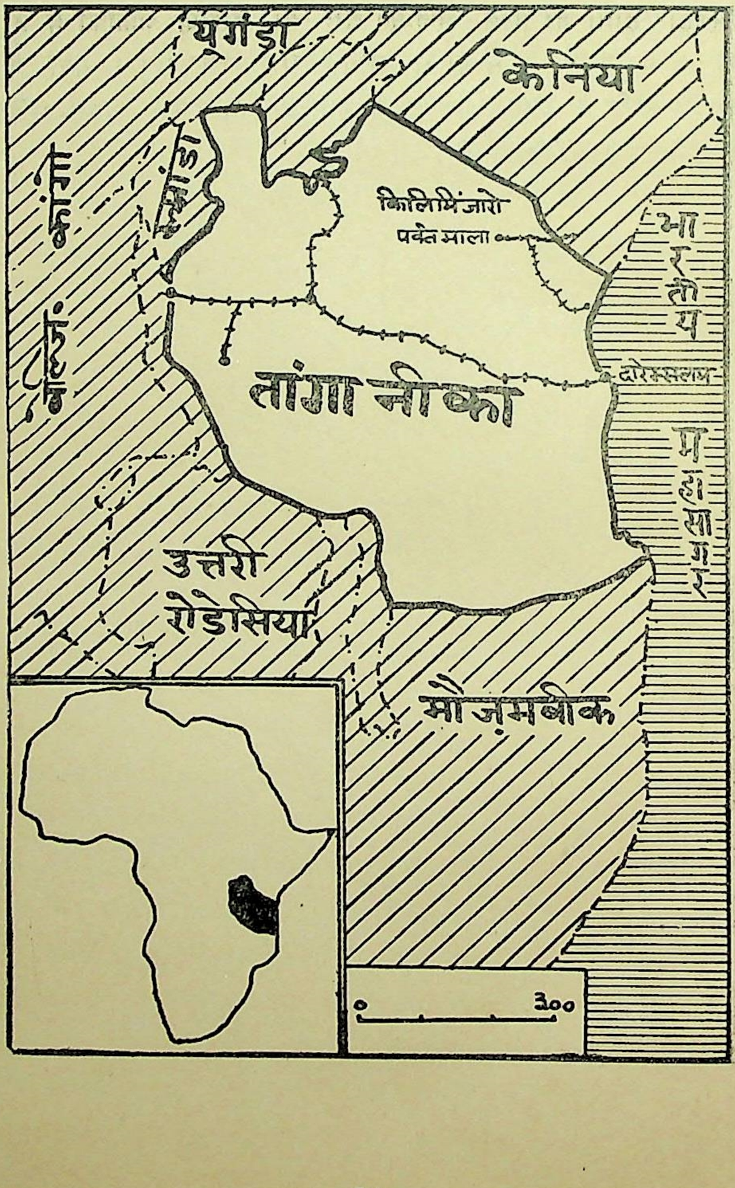

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तांगानीका

अफ्रीका के पूर्वी तट के साथ-साथ बसे तांगानीका देश का क्षेत्रफल ३६२,६८८ वर्गमील और जनसंख्या ७,६६५,००० अफ्रीकी, ६५,००० भारतीय, २०,००० अरब लोग और २०,३०० यूरोपीय हैं। राजधानी और मुख्य बन्दरगाह दारेस्सलम है।

सन् १८८५ में जर्मनी ने इस देश पर अपना कब्ज़ा कर लिया था। एक जर्मन ने ही 'सीसल' का पहला पौदा बाहर से मँगवाकर यहाँ लगाया था। आज देश का आर्थिक ढांचा सीसल के निर्यात पर खड़ा है। यही सीसरा मुख्य निर्यात है। प्रतिवर्ष १८०,००० टन बाहर भेजा जाता है।

जब प्रथम विश्वयुद्ध में जर्मनी की पराजय हुई तो तांगानीका को मैंडेट बनाकर ब्रिटेन के अधीन रख दिया गया। कुछ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ब्रिटिश क्षेत्रों में तो यह भी चर्चा हुई थी कि तांगानीका को भारत का मैंडेट बनाया जाय। यह सौभाग्य की बात है कि यह चर्चा आगे न बढ़ी, और भारत के हाथ काले होने से बच गए। ब्रिटेन को तांगानीका मिल तो गया, परन्तु ब्रिटेन ने इसके आर्थिक विकास के लिए कुछ नहीं किया। देश का अधिक भाग आज भी पिछड़ा हुआ है। प्रवासी जर्मन लोग यहीं रहते रहे। जब द्वितीय विश्वयुद्ध आरम्भ हुआ तो जर्मन लोगों को यहाँ से निकाल दिया गया और उनकी ज़मींदारियों को यूनानी लोगों ने (कुछ भारतीयों ने भी) खरीद लिया। युद्ध के समय देश का कुछ आर्थिक विकास हुआ, परन्तु शासन का ढांचा केनिया से नत्थी हो गया। आर्थिक क्षेत्र में केनिया, यूगंडा और उत्तरी रोडेसिया से सहयोग स्थापित हुआ। युद्ध की समाप्ति पर ब्रिटेन ने यहाँ अपनी मूँगफली की एक बड़ी भारी योजना को कार्यान्वित किया, परन्तु यह योजना असफल रही। इसके बाद मिस्र को छोड़ने की सम्भावना के कारण यहाँ सैनिक अड्डे स्थापित करने की चर्चा भी चली।

तांगानीका की किलिमिंजारो पर्वतमाला महाद्वीप में सबसे ऊँची पर्वतमाला है। किलिमिंजारो और बुकोवा की ढलानों पर कॉफी के बगीचे हैं। छग्गा जाति के लोग कॉफ़ी के इन बगीचों पर काम करते हैं। इनकी सफल सहयोग योजना अफ्रीकी सहयोग का उदाहरण है। कॉफी से अच्छी आमदनी होती है। गत तीस वर्षों में छग्गा जाति की संख्या भी १००,००० से बढ़कर २५०,००० हो गई है।

देश का शासन एक गवर्नर करता है। एक विधान-सभा भी है जिसके ३१ सरकारी सदस्य हैं और १० सदस्य यूरोपीय, १० अफ्रीकी और १० भारतीय हैं। परन्तु लिखने और बोलने की स्व-तन्त्रता नहीं है। यदि कोई अफ्रीकी अपना समाचार-पत्र निकालना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चाहे तो उसे १३,००० रुपये की ज़मानत दाखिल करनी पड़ती है। अफ्रीकी गरीब हैं, इसलिए कोई भी इतनी भारी रकम नहीं दे सकता और इसके परिणामस्वरूप आज देश-भर में कोई अफ्रीकी समाचार-पत्र नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

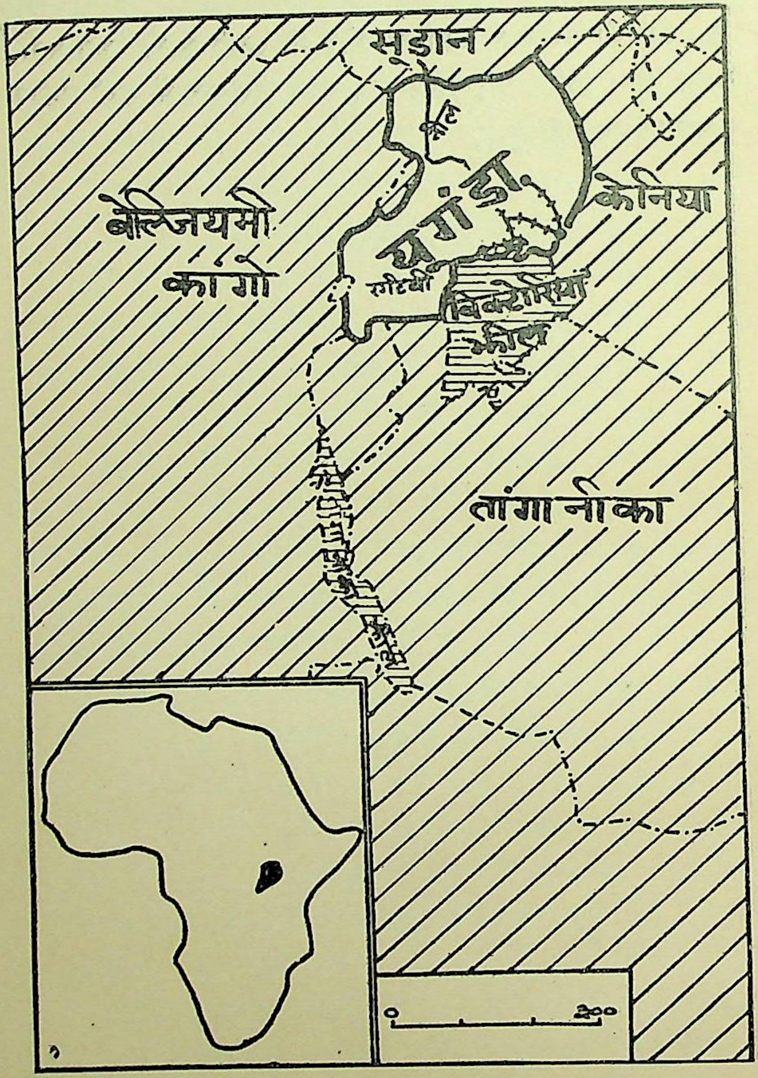

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यूगंडा

'रक्षित' उपनिवेश यूगंडा का क्षेत्रफल ९३,९८१ वर्गमील, जन-संख्या ५,३४३,००० और राजधानी एंटिब्बी है। देश के सातवें भाग में पानी की झीलें हैं।

कुल मिलाकर चार प्रान्त हैं : (१) बुगंडा (२) पश्चिमी प्रान्त, जिसमें बुनयोरो, अंकोले और तोरो हैं, (३) पूर्वी प्रान्त और (४) उत्तरी प्रान्त, जहाँ नीले नील नदी का उद्गम है।

बुगंडा की राजधानी सुन्दर कम्पाला है, जो रोम की तरह सात पहाड़ियों पर बसी है। एक पहाड़ी पर पुराना गिरजा घर है, दूसरी पर मैकेरेरे कालेज जो पूर्वी अफ्रीका का पहला कालेज है। यूगंडा पर ब्रिटिश राज्य का वही स्वरूप है जो भारतीय रजवाड़ों का हुआ करता था। बुगंडा को लीजिए। इसके नरेश (कबाका) की एक विधान सभा (लूकीको) है। शासन में सहायता के लिए एक प्रधान मन्त्री, एक न्यायाधीश और एक मुख्य खज़ांची हैं। यूगंडा के अधिक भाग में ज़मीन पर अफ्रीकियों का ही कब्ज़ा है। सरकार इनकी सहायता भी करती है। कपास और कॉफी की भी खेती प्रायः अफ्रीकी ही करते हैं। अफ्रीकी किसानों की एक सह-कारी संस्था भी है जिसके ५०,००० सदस्य हैं। संस्था ने कई यूरो-पीयों को अपने मैनेजर इत्यादि के पद दे रखे हैं।

यूगंडा की भूमि बहुत उपजाऊ है। कई धातुएँ भी मिलती हैं। कम्पाला के पश्चिम में कीलेम्बे स्थान पर तांबा मिला है। अब इस स्थान तक रेलवे बन रही है। रेलवे शायद आगे भी ले जाई जाय। ओवन प्रपात से बिजली तैयार करने की योजना भी है। जब बिजली तैयार होने लगेगी, तब जींजा स्थान पर औद्योगिक धन्धे बहुत बढ़ जायँगे। अभी भी तोरो स्थान पर सीमेण्ट का एक बड़ा कारखाना है। यूगंडा के गवर्नर की सहायता के लिए एक विधान सभा है। उपनिवेश में राजनीतिक अशान्ति है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

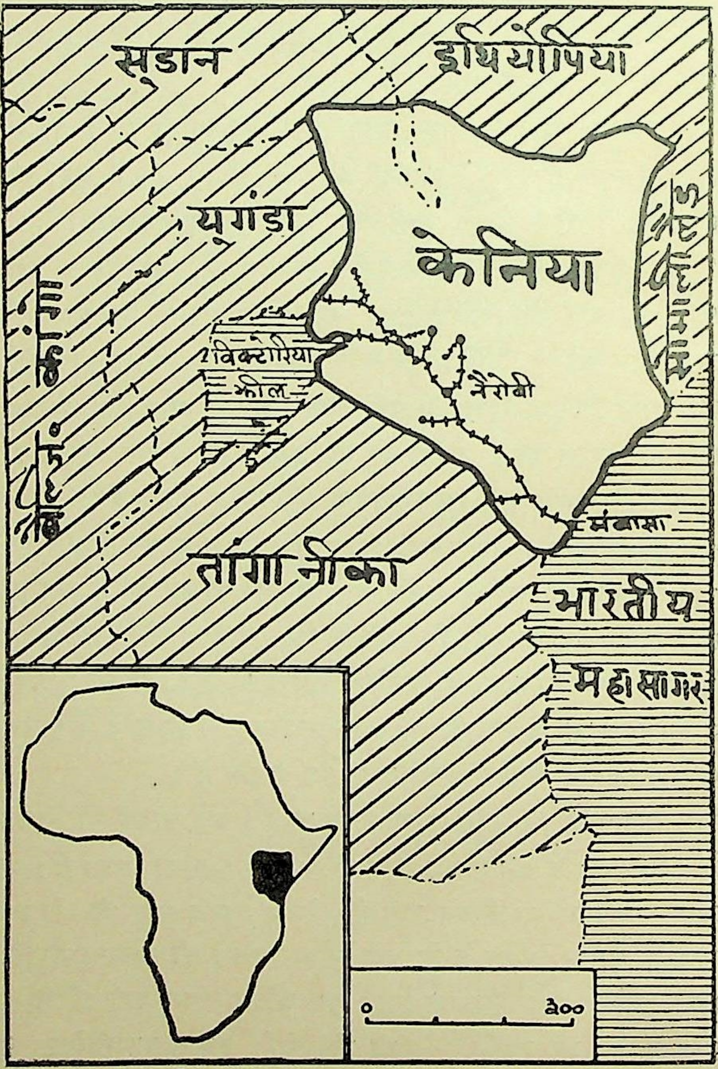

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

केनिया

तांगानीका के उत्तर में, और इथियोपिया के दक्षिण में, भारतीय महासागर के किनारे बसा केनिया देश है। क्षेत्रफल २२४,६६० वर्गमील, जनसंख्या ५७,२६,००० अफ्रीकी, ६८,००० भारतीय, २४,००० अरब और ४६,५०० यूरोपीय हैं। राजधानी नैरोबी है। अफ्रीकियों में से १,२५०,००० किक्यू जाति के हैं जो नैरोबी के उत्तर पश्चिम में रहते हैं, जहाँ से माऊ-माऊ संस्था का जन्म हुआ है। देश के दो भाग हैं—एक भारतीय महासागर के तट के साथ-साथ की टुकड़ी और दूसरा आन्तरिक भाग। देश का उत्तरी भाग रेगिस्तानी और दक्षिणी भाग उपजाऊ है। तट से थोड़ी दूर एक मैदान है जो समुद्र-स्तर से ३,००० फुट से लेकर १०,००० फुट तक ऊँचा है। केनिया पहाड़ की ऊँचाई तो १७,००० फुट है।

१८९६ में मंबासा से यूगंडा तक रेलवे बनाई गई, तब बहुत-से भारतीय मज़दूरों और मिस्त्रियों को केनिया ले जाया गया। (केनिया की राजधानी) नैरोबी में उस समय केवल रेलवे का एक बड़ा गोदाम और डिपो था। आज इसकी जनसंख्या १९०,००० है, जिनमें से आधे अफ्रीकी हैं। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद केनिया में बहुत-से ब्रिटिश सैनिक आये जिन्होंने बहुत सस्ते दामों पर अच्छी-अच्छी ज़मीन सरकार से खरीद ली और स्वयं यहाँ बस गए। आज भी इन ब्रिटिश 'जमींदारों' ने लगभग १६,००० एकड़ उपजाऊ भूमि (जो केनिया की आधी उपजाऊ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भूमि से अधिक है) पर कब्ज़ा कर रखा है। अर्थात् इतनी ज़मीन कि वे उसकी काश्त भी नहीं कर सकते। यदि आप विक्टोरिया झील के आसपास के मैदान को पार करके पहाड़ी इलाके में आयें तो मीलों तक उपजाऊ ज़मीनों के चारों ओर तार लगे हुए हैं, परन्तु काश्त करने वाले कोई नहीं। इसीलिए गोरे लोग चिल्ला रहे हैं कि अधिक संख्या में ब्रिटिश लोग वहाँ भेजें जायँ ताकि अपनी सत्ता की सुरक्षा कर सकें। इधर अफ्रीकियों के पास गैर उपजाऊ ज़मीन है। जमीन के अभाव के कारण हज़ारों ही अफ्रीकी शहरों में जाते हैं ताकि नौकरी करें। इसके दुष्परिणाम भी हैं। नैरोबी की १५ प्रतिशत अफ्रीकी जनसंख्या के पास मकान नहीं हैं। इसलिए बहुत भीड़ है। व्यभिचार और हिंसात्मक कार्य भी होते हैं। तांगानीका और यूगंडा की अपेक्षा केनिया के रंगभेद कानून बहुत कड़े हैं। अभी तक यूरोपीय ही कॉफी उगा सकते थे। मकई की सारी उपज सरकार खरीदती है, परन्तु एक ही प्रकार की मकई के लिए यूरोपीयों को अधिक कीमत दी जाती है और अफ्रीकियों को कम।

रंगभेद नीति का सबसे महत्त्वपूर्ण अंग शिक्षा है। यूरोपीय बच्चों की शिक्षा के लिए यूरोपीय टैक्स देते हैं। अफ्रीकी बच्चों के लिए अफ्रीकी और भारतीय बच्चों के लिए भारतीय जनसंख्या को टैक्स देना पड़ता है। परिणाम यह है कि सब जातियों के बच्चों के लिए भिन्न-भिन्न स्कूल हैं। एक यूरोपीय बच्चे पर प्रतिवर्ष १६२५ रुपया खर्च होता है, भारतीय बच्चे पर ३१५ रुपये और अफ्रीकी पर ६८ रुपये। एक जाति के बच्चों का दूसरी जाति के बच्चों से कोई सम्पर्क नहीं रहता।

देश में भूमि की भूख और रंगभेद की नीति ने एक ज़हरीला वातावरण पैदा कर दिया है, जिसका विस्फोट माऊ-माऊ संस्था में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हुआ। संस्था प्राय: किक्यू जाति से उत्पन्न हुई जिसके १,२५०,००० सदस्य नैरोबी के उत्तर-पश्चिम में रहते हैं। ये ही केनिया अफ्रीकी यूनियन के सदस्य हैं। यह आन्दोलन कई वर्षों से चल रहा है।

समाचार पत्रों पर कड़े प्रतिबन्ध लगे हैं। पहले तो अफ्रीकी लोग भारतीय छापाखानों में समाचार-पत्र छपवाते थे, परन्तु सरकार ने छापाखाने बन्द करने की धमकी देकर उन सबको डरा दिया है। अब अफ्रीकी अपने समाचार-पत्रों को साइकलोस्टाइल करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

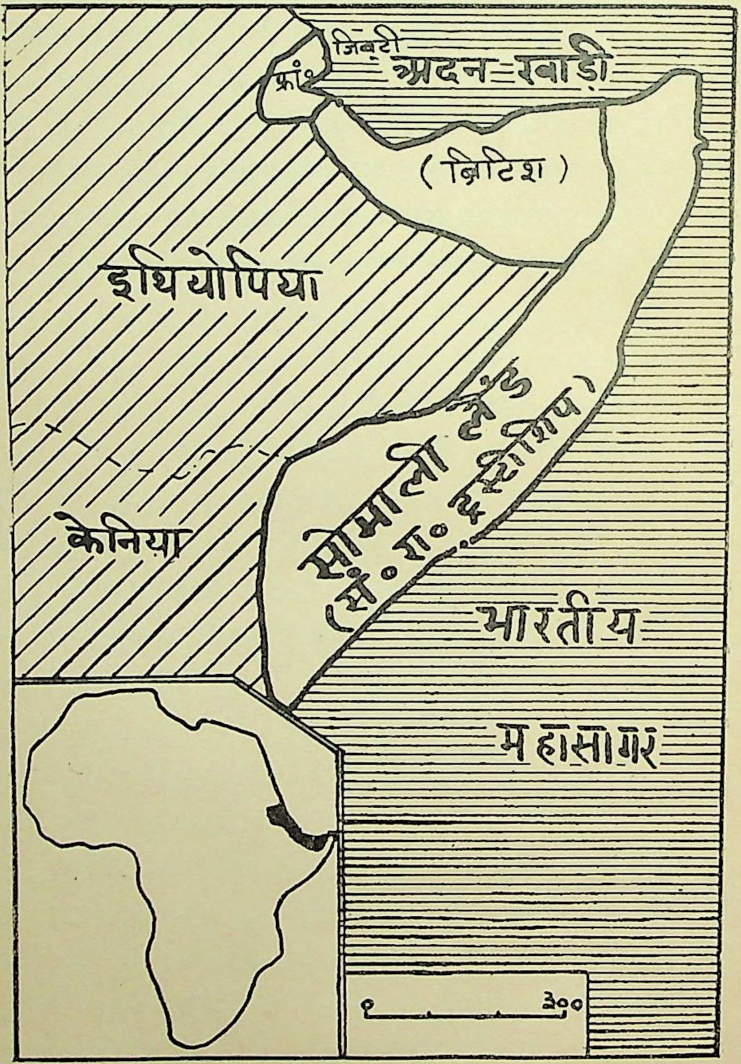

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सोमालीलैंड

भारतीय महासागर और अदन खाड़ी के तट के साथ-साथ अफ्रीका के उत्तर-पूर्वी कोने पर सोमालीलैंड देश है, जिसके तीन भाग हैं। एक भाग पर ब्रिटेन ने, दूसरे पर फ्रांस ने और तीसरे पर इटली (अब ट्रस्टीशिप) ने कब्जा कर रखा है।

(१) ब्रिटिश सोमालीलैंड (क्षेत्रफल ६८,००० वर्गमील, जनसंख्या ५००,०००) पर ब्रिटेन का कब्जा १८८४ में हुआ था। समुद्र-तट से कुछ दूर देश के भीतर एक मैदान है जो ३० मील से लेकर ६० मील तक चौड़ा है। हाल ही में देश में धातु और तेल भण्डार का पता लगा है।

(२) फ्रांसीसी सोमालीलैंड (क्षेत्रफल ८,४९२ वर्गमील और जनसंख्या ४५,०००) पर फ्रांस का कब्जा १८५६ में हुआ था। यह भाग बाबलमंदव खाड़ी के तट के साथ-साथ है और इसकी राजधानी और मुख्य बन्दरगाह जिबूटी है, जहाँ से एक रेलवे देश के अन्दर जाती है। यही इथियोपिया की उपज को बाहर ले जाती रही है। देश का निर्यात : चमड़ा, कॉफी और नमक है।

(३) सन् १८८९ में इटली ने भी सोमालीलैंड के एक भाग पर (क्षेत्रफल २२०,००० वर्गमील और जजसंख्या ९००,०००) कब्जा किया था। १९२५ में ब्रिटेन ने केनिया का जूबलैंड का इलाका भी इटली को दे दिया था। देश के मुख्य निर्यात हैं : चमड़ा, गोंद, कॉफी। इटली का उपनिवेश अब ट्रस्ट क्षेत्र है और १९६० में यह भाग स्वतंत्र हो जायगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

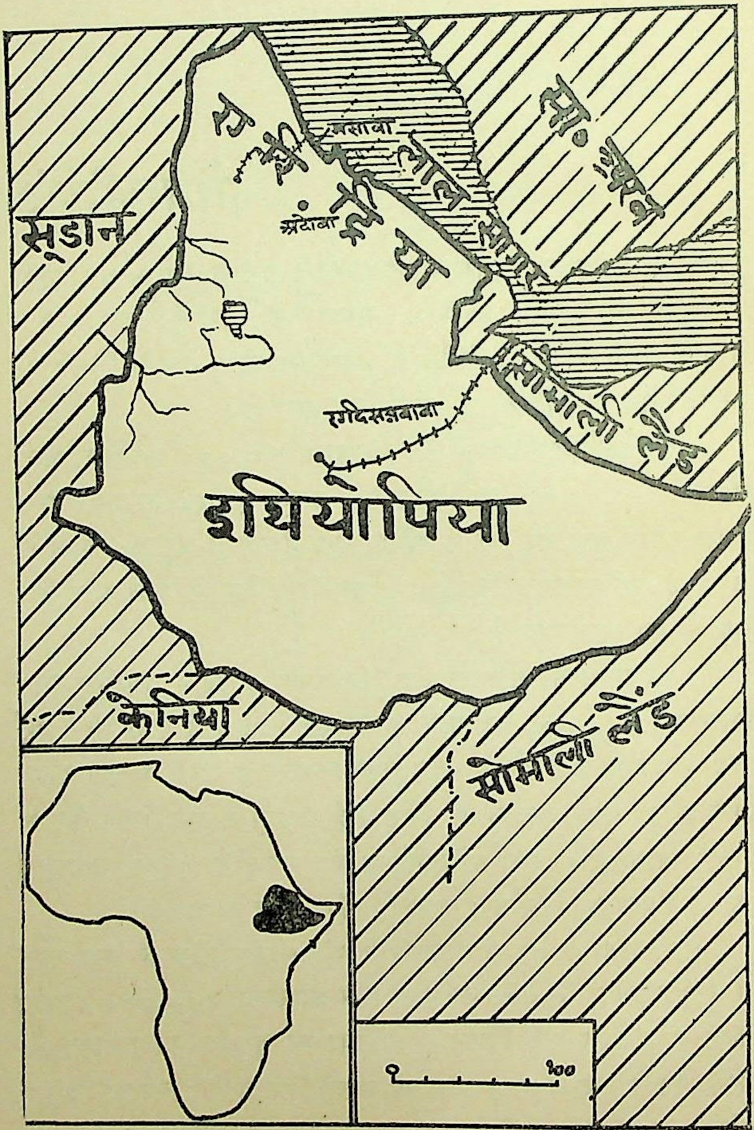

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इथियोपिया

इथियोपिया, जिसे पहले अबीसीनिया भी कहा जाता था, अफ्रीका का सबसे पुराना स्वतंत्र राज्य है। महाद्वीप के उत्तर-पूर्वी कोने पर वसा है। क्षेत्रफल ४४०,००० वर्गमील है और जनसंख्या १६,०००,०००। राजधानी एदिस अबाबा है। देश के तीन भाग हैं। पूर्व की ओर रेगिस्तान और मैदान, पश्चिम की ओर कॉफी उद्यान और पहाड़ी इलाका। देश के निवासी ईसाई हैं। १५०० वर्ष पूर्व यह मत इस देश में आया था। नरेश हेल सेलासी का दावा है कि ईसाई-नरेश सोलोमन और रानी शेवा उसी के पूर्वज थे। इतना अवश्य है कि हेल सेलासी की जाति, अम्हरी के लोग ३००० वर्ष पूर्व यहाँ पश्चिमी एशिया से आए थे। आज देश की जनता का आधे से अधिक भाग अम्हरी ईसाई हैं; बाकी मुसलमान हैं।

सफेद नील नदी का उद्गम इसी देश में है। पुराने जमाने से अरब और यूरोपीय लोग प्रयत्न करते रहे हैं कि इस देश पर कब्जा कर लें। १८६६ में इटली नें इथियोपिया पर कब्जा करने का प्रयत्न किया, परन्तु मार खाई। मुसोलिनी ने १६३४-३५ में फिर हमला किया और १६३६ में देश पर कब्जा कर लिया। परन्तु दूसरा विश्व युद्ध प्रारम्भ होने के थोड़े ही दिन बाद (१९४१ में) इटली की पराजय हुई और हेल सेलासी वापस इथियोपिया लौट आये। सितम्बर १६५२ में इटली का उपनिवेश एरिट्रीया (क्षेत्रफल ४५,००० वर्गमील, जनसंख्या ६००,०००) भी इथियोपिया को सौंप दिया गया। इथियोपिया और एरिट्रीया का फेडरेशन है। इससे इथियोपिया को लाल समुद्र तक पहुँचने के लिए फ्रांसीसी सोमालीलैंड के बीच से जाने की बजाय, सीधा रास्ता मिल गया है और देश की मुख्य बंदरगाह मसावा बन गई है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राजकमल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE